४. चतुर्थ अध्याय: उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के राग |

४.० प्रस्तावना

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित षाडव-षाडव जाति के रागों का शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है ।

४.१ बिलावल थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.१.१ राग : चक्रधर

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह : सा, रे ग म, [नि]ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म, ग, रे सा, रे ग म - -

पकड़ : म [नि]ध नि ध, म ग रे सा, रे ग म -

विशेषता : यह कर्नाटक पद्धति का राग है । इसके पूर्वांग में गौड़ का आभास 'सारेगम, सा-रेगम, सारे रेग गम, मगरेसा, रेगम,' इत्यादि स्वरों में होता रहता है । परन्तु उत्तरांग में 'मधनिसां' तथा 'सांनीधम' इत्यादि भिन्नषड्ज की स्वरावली से गौड़ का अस्तित्व नष्ट हो जाता है । आरोही धैवत लेते समय धैवत को निषाद का कण दिया जाता है |

स्वर विस्तार: सा ऩि ध़ म़, ध़ ऩि सा, ध़ ऩि सा रे सा, रे सा, रेगम, ग-रेसा। सा-रेगम, रेग, रेगम, सारे रेग गम, ध़ऩि सा-रेगम, धम, मधनिध,म, रे ग म, ग-रेसा, मगरेसा-, ध़ऩि सा-रेगम । सा ऩि ध़ऩि सारेगम, रे ग म, म ध म, धम, मधनी- धम, गमनिध, गमधनीसां निधम, मनिधम, धम,ग,रेसा, ऩिध़ऩिसा, रेसा, रेगम-। सा रेगम, ध निसां मधनिसां, गम

धनिसां-, रेंसां, रें गं मं, गं-रें सां, सांरेंसांसां, निध, म, गमधनि, धम, गम, गरेसा, रेगम-, मगरेसा, रेसा, रेगम–|[१]

राग : चक्रधर - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बैरन सी रतिया पिया बिन | बाट जोवत निस-दिन नैन मोरे | सखी री जुगसी बीतत पल छिन |

अंतरा : रात न निंदिया चैन न दिन मोहे | सखी मन की उलझन न सुलझत ||

स्थायी

ध - म ग	रे सा रे ग	म - - म	ध नि सां नि
बै ऽ र न	सी ऽ र ति	या ऽ ऽ पि	या ऽ बि न
ध नि सां नि	ध ध म ग	ध ध म ग	म ग रे सा
बा ट जो ऽ	व त नि स	दि न ऽ नै	ऽ न मो रे
ध़ ऩि सा -	रे ग म -	ध नि सां रें	सां नि ध म
स खी री ऽ	जु ग सी ऽ	बी ऽ त त	प ल छि न
०	३	×	२

अंतरा

म - ध नि	सां सां सां -	ध नि सां रें	सां नि ध ध
रा ऽ त न	निं दि या ऽ	चै ऽ न न	दि न मो हे
रें गं मं -	गं रें सां सां	सां नि नि ध	म ग रे सा[२]
स खी ऽ ऽ	म न की उ	ल झ न न	सु ल झ त
०	३	×	२

राग : चक्रधर - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : कैसे कटे रतिया मोरी तुम बिन, कब घर आवे मोरे प्यारे तुम।

अंतरा : जब से गए कोऊ ख़त न खबरिया, कौन जतन करे अब मोरी आली।

स्थायी

सां - नि ध	- म ग रे	सा - रे ग	म ग म म
कै ऽ से क	ऽ टे र ति	या ऽ मो री	तु म बि न
०	३	×	२
ग म ध म	ध नि सां -	सां रें सां नि	ध म ग म
क ब घ र	आ ऽ वे ऽ	मो ऽ रे प्या	ऽ रे तु म
०	३	×	२

अंतरा

म ग म ध	नि - सां सां	ध नि सां रें	सां नि सां -
ज ब से ग	ए ऽ को ऊ	ख़ त न ख	ब रि या ऽ
०	३	×	२
रें गं मं मं	गं रें सां सां	सां सां नि ध	म ग रे सा³
कौ ऽ न ज	त न क रे	अ ब मो री	आ ऽ ली ऽ
०	३	×	२

४.१.२ राग : केदार मल्हार (सावनी केदार)

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : गंधार

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : दोनों निषाद तथा दोनों मध्यम बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : वर्षाऋतू, रात्री का दुसरा प्रहर

आरोह : सा रे सा म, म प, नि̲ ध नि सां

अवरोह : सां ध नि̲ म प, प $^{\text{ध}}$प म, सा रे सा

पकड़ : सा रे सा नि़-, नि़̲ म़ प़, सा, सा म $^{\text{म}}$रे सा

विशेषता : इस राग में केदार तथा मल्हार का मिश्रण है । यहाँ सावनी से तात्पर्य है सावन(श्रावण) मास तथा मल्हार वर्षाऋतु में गाये जाने के कारण इसे सावनी केदार (केदार मल्हार) भी कहते हैं । इस राग में पूर्वांग में केदार तथा उत्तरांग में मल्हार का मिश्रण है ।[४] आचार्य एस एन रातंजनकर जी ने 'अभिनव गीत मंजरी-भाग-३' के अन्तर्गत सावनी केदार का वर्णन किया है; इस के अन्तर्गत स्वर विस्तार में आलापों का अंत 'गमप, गम- $^{\text{सा}}$रे सा' स्वरावली से किया हुआ दिखाई देता है ।[५]

स्वर विस्तार : सा नि़ नि़̲ म़ प़, प़ नि़̲ $^{\text{ध}}$नि़ सा, सा म-, $^{\text{म}}$रे सा। साम -, मप-, म॑प म॑पधप म, प म रे सा, रे सानि़- नि़̲ $^{\text{ध}}$नि सा। सा म प-, धप म -, निधप $^{\text{ध}}$पम, मप नि̲- $^{\text{ध}}$नि सां, $^{\text{सां}}$ध $^{\text{नि̲}}$म प, धप म, $^{\text{म}}$रे सा। पधमप

नि̱ $^{\text{ध}}$नि सां-, सांरेंरेंसांनिसां मं $^{\text{सां}}$रें - सां, $^{\text{सां}}$ध $^{\text{नि̱}}$म प, धप म, $^{\text{म}}$रे सा। सा म रे प नि̱ म प, ध प म प, म, रे सा, म प नि̱ ध नि सां, ध नि̱ म प,ध प म, म प, म, रे सा |[६]

राग : केदार मल्हार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: हरि के नाम बिना दुःख पावै।भगति बिना संशय नहीं चूकै। गुरु यह भेद बतावै।

अंतरा: कहाँ भयो तीरथ व्रत कीये राम शरण नहीं आवै। योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो। जो प्रभु यज्ञ बिसरावै।

स्थायी

			नि
			ह
ध प म॑प धप	म - - प	म॑प धप म म	[म]रे - सा -
रि के ऽऽ ऽऽ	ना ऽ म बि	नाऽ ऽऽ दुः ख	पा ऽ वै ऽ
३	×	२	०
नि़ नि़ नि़॒ ध़	नि़ सा सा -	म म प प	म॑प धप म -
भ ग ति बि	ना ऽ सं ऽ	श य न हीं	चूऽ ऽऽ कै ऽ
३	×	२	०
प प नि॒ ध	धनि सांरें नि सां	सांरें सांनि धप म॑प	धप मम रेसा नि
गु रु य ह	भेऽ ऽऽ द ब	ताऽ ऽऽ वैऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ह
३	×	२	०

अंतरा

म म - म	प - नि॒ ध	नि नि सां सां	नि रें सां -
क हाँ ऽ भ	यो ऽ ती ऽ	र थ व्र त	की ऽ ये ऽ
३	×	२	०
सां - सां मं	रें सां नि सां	सांरें निसां [नि]ध -	नि ध [म॑]प -
रा ऽ म श	र ण न हीं	आऽ ऽऽ ऽ ऽ	वै ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
म॑ - प धनि	सां ध ध नि	ध प म॑ प	म॑प धप म -
यो ऽ ग यऽ	ऽ ज्ञ नि ऽ	ष्फ ल ति हिं	माऽ ऽऽ नो ऽ
३	×	२	०
म - प प	ध नि सां रें	सां - [सां]ध -	[नि]म॑ - प नि
जो ऽ प्र भु	य ज्ञ बि स	रा ऽ वै ऽ	ऽ ऽ ऽ ह

४.२ कल्याण थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.२.१ राग : राजकल्याण

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : मध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : ग

संवादी : नि

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह : ऩि रे ग मं ध नि सां

अवरोह : सां नि ध मं ग रे, ऩि रे सा

पकड़ : साऩिधऩिरे ग, रे ग मं ग, मंरेग, मं ग रे, ऩि रे सा

विशेषता : राग यमन में पंचम वर्ज करके इस राग की संकल्पना की गई है । राग कल्याण में लगने वाली 'ग-नि', 'मं-नि', ग-ध', 'ध-रे' इत्यादि स्वर संगती इस राग में भी ली जाती है ।

स्वर विस्तार: सा, सारेसासा ऩि-, ध़ ऩि, ध़ ऩि रे सा। साऩिध़ऩिरे ग -, रे ग मं ग, ग मं रे ग, मंग रे, ऩि रे सा। ऩिरेगगरेसा ऩिरे गमं–ग, रे ग, रे मं ग, ग मं ध, मं ध नि--,ध मं ग, निनि ध मं ग रे, रेग मंरे ग, मं ग रे, ऩि ध़, ऩि रे सा। ऩिरेगमंधनि, मंधनी, मंनि, निमं ध नि, रे नि, मं ध नि, निनिध, मंधनि [रें]धसां, धनिरें गं, गं रें, नि रें सां, ध नि रें नि ध मं, धनी धमं गरे, रेग मंरे गमं ग रे, ऩि ध़, ऩि रे सा।[८]

राग : राजकल्याण - एकताल (विलंबित)

स्थायी : बाजोरे बाजो मंदिलरा शुभदिन शुभघड़ी लालन घर आज।

अंतरा : सब सखी बन आई करत मंगलचार आज उनके भइला काज।

स्थायी

ग-गरेऩिसासा- धऩिरेग	मंग मरे-गरे	सा ऩिधऩिरे	-गरे गमंध-
बाऽऽऽऽऽऽऽ जोरेबाऽ	जोऽ मंऽदिल	रा शुभदिन	ऽशुभ घड़ीऽऽ
४	×	०	२

मं मंध निधमं	ग रे गमं धमं गरेसा-
ऽ लाऽ ऽलन	घ र काऽ ऽऽ ऽऽजऽ
०	३

अंतरा

मंगमंध -मंनिध	सांसां निधनि-	रें नि निरें गं रें सां रेंसां नि
सबसखी ऽऽबन	आई करनऽ	ऽ ऽ मंऽ ऽ ग ल चाऽ ऽ
४	×	०

निध गं- - रें	निरेंसां- धनिमं-	रे - गमं धमं गरेसा- ९
र ऽ आऽऽ ज	उनकेऽ भइलाऽ	ऽ ऽ काऽ ऽऽ जऽऽऽ
२	०	३

४.२.२ राग : सरस्वती

थाट : कल्याण, मेलकर्ता - वाचस्पति

वर्ज्य स्वर : गंधार

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : निषाद स्वर कोमल तथा मध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह : सा, रे मं प, नि॒ ध प, नि॒ ध सां

अवरोह : रें नि॒, ध प मं, रे मं प, मंरे- सा

पकड़ : रे मं प, नि॒ ध प, मं प, मंरे,- सा

विशेषता : यह एक कर्णाटक पद्धति का राग है । इस राग को प्रचलित करने का श्रेय गलियार के दरबारी गायक उमेड़कर बोवा को जाता है | इस राग के आरोह में निषाद वक्र है; जैसे की 'मंपध नि॒धसां' | 'परे' एवं 'रेंनि॒' की संगती बार-बार दिखाई देती है। इस राग में तीव्र मध्यम पर न्यास करते है ।[१०] षडज, रिषभ तथा पंचम भी न्यास के स्वर हैं | इस राग के पूर्वांग में कल्याण के 'रे मं प, प मं रे मं प, प रे रे सा' गंधार वर्ज्य वाले स्वर समूह के साथ 'ध नि॒ नि॒ ध सां, रें नि॒ ध, नि॒ ध प ध सां' यह झिंझोटी के स्वर समूह को मिलाया गया है |[११] 'राग विज्ञान' सप्तम भाग के अन्तर्गत स्व. पं. वि. ना. पटवर्धनजी ने इस राग के आरोह में गंधार निषाद तथा अवरोह में गंधार वर्ज्य करके औडव-षाडव जाति का राग माना है ।[१२]

स्वर विस्तार: सा ऩि ऩि ध़ सा, रे मं ^प^रे - सा। सा रे रे सा, सा रे मं प, रे मं प, रे मं प ^नि^ध ^नि^ध प, ध मं प, प मं रे, रे मं प रे रे सा। सा- रे मं प ध, रे मं प ध नि ध, नि ध प, रे मं प रे, मं प रे, रे मं प ^मं^रे - सा। सा रेमंप,ध, निध, निध सां, धसांरें नि ध, निध सां, रें रें नि ध रेंनिध सां, रें नि ध प, नि ध प मं, रे मं प मं, रे मं प मं रे, रे मं प रे- - ऩि ध़ सा।[१३]

राग : सरस्वती - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : मन चाहत देखन को, सुरतिया तेहारी।
अंतरा : मोरे घर आवो पिया, जाऊँ मैं तोपे वारी॥

स्थायी

रे मं	पध निध	मं प	रे -	ऩि ध़	सा -
म न	चाऽ ऽऽ	ह त	दे ऽ	ख न	को ऽ
×	०	२	०	३	४
रे -	मं प	^ध^नि ध	सां -	रेंसां निध	मंप -
सु ऽ	र ति	या ते	हा ऽ	ऽऽ रीऽ	ऽऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

अंतरा

मं प	प ध	नि ध	सां -	नि ध	सां -
मो ऽ	रे घ	ऽ र	आ ऽ	वो पि	या ऽ
×	०	२	०	३	४
रें -	रें सां	सां सां	निसां रेंसां	निसां निध	पमं रेसा [१४]
जा ऽ	ऊँ मैं	तो पे	वाऽ ऽऽ	ऽऽ रीऽ	ऽऽ ऽऽ
×	०	२	०	३	४

४.२.३ राग : जैमिनि सारंग

थाट : काफी और कल्याण, मिश्रमेलोत्पन्न

वर्ज्य स्वर : गंधार

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : दोनों निषाद तथा मध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रे-, मं प-, नि सां

अवरोह : सां, नि॒ प, मंप, ध, नि॒धप, मं मरे, ऩि सा

पकड़ : रे मं प ध नि॒ ध प, मं प, नि सां, नि॒-प मं मरे, सा रे ऩि सा

विशेषता : यह सारंग का एक अप्रचलित प्रकार है | इस राग में धैवत का 'पधनिसां' तथा 'सांनि॒धप' इस प्रकार आरोह-अवरोह में सरल प्रयोग न करके उसे कोमल निषाद की संगती में 'रे मं प ध नि॒ ध प' तथा 'नि॒धपधमंप' इस प्रकार प्रयोग करते हैं | वैसे ही शुद्ध निषाद आरोह में जैसे 'पनिसां' तथा कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में जैसे 'सांनि॒प' इस प्रकार होता है | क्रमश: आरोह-अवरोह करते समय 'पनिसां' तथा 'सांनि॒प' इस प्रकार धैवत को छोड़ दिया जाता है | इस राग के निकटवर्ती रागों में 'नूर सारंग' है जो जैमिनि सारंग के पूर्वांग से बहुत कुछ समानता रखता है| परन्तु 'नूर सारंग' में फ़क्त शुद्ध निषाद होने के कारण दोनों राग एक दुसरे से भिन्न हो जाते हैं | इस राग के वादी-संवादी को लेकर मतभेद है

कोई-कोई 'प सा' वादी-संवादी मानते हैं | इस राग की रचना में विलंबित एकताल में 'चोलरा रंग लाल पहेरे' है |

राग स्वरुप : नि़ सा, रे म॑ प, रे म॑प, ध, नि॒ध प, म॑प, रेम॑पधनि॒ध, प, ध म॑, प नि, सां, रें नि, सां, नि॒प, म॑प, ध प, ध म॑, प, रेम॑पधनि॒ध, पध, म॑ प, म॑ रे, सारे, नि़ सा, नि़॒ प़, नि़ सा, रे नि़, सा |[15]

राग : जैमिनी सारंग - त्रिताल (सरगम गीत)

स्थायी

रे म॑ प ध	नि॒ ध - प	म॑ प म॑ रे	सा नि़ सा -
०	३	×	२
प़ नि़ सा रे	म॑ रे म॑ प	नि सां सां रें	नि सां नि॒ प
०	३	×	२

अंतरा

म॑ प नि नि	सां नि सां -	रें म॑ पं म॑	रें नि सां -
०	३	×	२
प नि सां रें	सां नि॒ - प	म॑ प ध प	म॑ रे नि़ सा[16]
०	३	×	२

४.३ खमाज थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.३.१ राग : जनसंमोहिनी (शुभकल्याण)

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : मध्यम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : रात्रि

आरोह : सा रे ग प, ध नि̲ सां अथवा सा रे ग, प, ध नि̲ ध सां

अवरोह : सां नि̲ ध प ग ^{प}रे सा, नि़̲ ध़ नि़̲ सा

पकड़ : ग प ध नि̲ ध प, ग ^{प}रे सा

विशेषता : इस राग में कलावती राग के स्वर लेकर कल्याण के 'ग ^{प}रे सा' को जोड़ा जाता है | पं. विनायक पटवर्धन जी ने वादी-संवादी 'सा प' माने है | आलाप का समापन 'सा नि़̲ ध़ सा' से भी होता है |[१७] मुलत: यह कर्नाटक पद्धति का राग है | पिछले कुछ वर्षो से आजकल उत्तर हिदुस्तानी संगीत में प्रचार में है | मूलत: इस राग का आविर्भाव कलावती राग में रिषभ का प्रयोग करने से होता है | रिषभ का प्रयोग कल्याण अंग से होने के कारण कल्याण अंग मिश्रित राग दिखाई देता है | 'ग प ग रे, ध प ग रे' इस स्वरावली में भूपाली तथा 'ग प ^{ग}रे' स्वर संगती में शुद्ध कल्याण इत्यादि का दर्शनात्मक भास होता है |

स्वरुप : सा ऩि॒ ध़ सा [ग]रे ग, ग प ग रे, ग [ग]रे - सा, सा ऩि॒ ध़ सा, ग प ध नि॒ ध - प ध नि॒ ध सां, सां नि॒ ध - प, ग प ध प ग रे, ग प [ग]रे - ऩि॒ ध़ सा ।[१८]

राग : जनसंमोहिनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मोहनी मूरत ललित श्याम की, जबसे नैन निहारी ।

अंतरा : बिन देखे कल ना परत आली वन माली वन माली री ॥

स्थायी

, गप ध प	ध नि॒ ध प	प ग [प]रे सा	ऩि॒ ध़ ऩि॒ सा
, मोऽ ह नी	मू ऽ र त	ल लि त श्या	ऽ म की ऽ
ग प ध नि॒	[ध]सां - सां सां	सांरें सांनि॒ धनि॒ धप	गप धप [ग]रे सा
ज ब से ऽ	नै ऽ न नि	हाऽ ऽऽ ऽऽ रीऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

अंतरा

ग ग प -	ध - नि॒ नि॒	सां सां सां सां	रें गं [रें]सां -
बि न दे ऽ	खे ऽ क ल	ना प र त	आ ऽ ली ऽ
गं गं [पं]रें -	सां - सांरें सांनि॒	धनि॒ धप गप धप	ग रे - सा[१९]
व न मा ऽ	ली ऽ वऽ नऽ	माऽ ऽऽ लीऽ ऽऽ	री ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०

४.४ भैरव थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.४.१ राग : बंगाल भैरव

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : निषाद

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : ऋषभ तथा धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : ध॒

संवादी : रे॒

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा रे॒, ग, म प, ध॒, सां

अवरोह : सां ध॒, प, म प ग म, रे॒ सा

पकड़ : सां ध॒, ध॒, प, गम, प, ग म रे॒, सा, सारे॒, सा, ध॒सा, रे॒, रे॒, सा

विशेषता : राग भैरव में निषाद वर्ज्य करने से इस राग का स्वरुप सामने आता है । पूर्णतः चलन भैरव का ही दिखाई पड़ता है । मतलब, इस राग में भैरव अंग मुख्य है | प्रचार में एक 'बंगाली' नाम का भी राग है; जो 'बंगाल भैरव' से बिलकुल भिन्न है | इस राग में निषाद वर्जित होने से स्वाभाविक ही 'साध॒' स्वर-संगती दिखाई देती है, जो राग वाचक भी है|[२०] इस राग में रिषभ तथा धैवत स्वर आंदोलित है | इस राग के अवरोह में गंधार वक्र है जो 'गमरे॒सा' इस प्रकार लगता है | दक्षिण में मायामालवगौड़ मेल से उत्पन्न 'कन्नड़ बंगाली' अथवा 'कर्णाट बंगाली' इस राग के स्वरों से थोड़ा साम्य रखते हैं | उसी प्रकार इस मेल से उत्पन्न आर्द्रदेशिका (आर्द्रदेशी) जो अल्प प्रचलित राग है; जिसका आरोह संपूर्ण है तथा अवरोह में निषाद वर्ज्य है; फर्क इतना है की आर्द्रदेशिका में आरोह में निषाद है | तथा बंगाल भैरव में निषाद नहीं है | इस राग का उठान 'ध॒ ध॒, प,

गमप, गमरे,सा, सारे, सा, ध़सा' इस प्रकार है | कुछ गुणिजन इस राग के उत्तरांग में निषाद का अल्प प्रयोग करते हैं; परन्तु निषाद वर्ज्य प्रकार ही प्रचार में अधिक सर्व संगत है |[२१]

स्वर विस्तार : सा ध़, ध़, सा, सा ग म रे सा , सा ग म प , ग म ध कुछ ध प, ध प म, प म ग, रे ग म प, ग म रे, रे, सा रे, ध सा, सारेगमरेसा, सारे गम प, म ग म प, ध, ध, सां, ध सां ध प, प ध म प, ग म रे सा ।

ग म ध, ध, प ध सां, सां रें रें सां, सां रेंरेंसांधसां, गं मं रें सां, रें रें सां ध सां , रें सां ध प, ध ध प म प, ग म रे, रे सा ।[२२]

राग : बंगाल भैरव - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ध॒ - प ध॒	म प म ग	(पम) (गरे॒) - सा	(ग)रे॒ - सा -
नै ऽ न स	फ ल अ ब	(भऽ) (एऽ) ऽ ह	मा ऽ रे ऽ
०	३	×	२
ध॒ - ध॒ सा	- सा ग म	(गम) प ग म	(ग)रे॒ - सा -
दे ऽ व लो	ऽ क नि ऽ	(साऽ) ऽ न ब	जा ऽ ए ऽ
०	३	×	२
सा रे॒ ग म	प प ध॒ सां	ध॒ - म प	ग म रे॒ सा
ब र ष त	सु म न सु	धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ध॒ - ध॒ -	सां सां सां -	रें॒ रें॒ रें॒ सां	(सांरें॒) गं रें॒ सां
जै ऽ जै ऽ	धु नि कि ऽ	न्न र मु नि	(गाऽ) ऽ व त
०	३	×	२
सां ध॒ ध॒ प	ध॒ - म प	ध॒ - - -	म प ग म
नि र ख त	जो ऽ ग बि	सा ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
ध॒ ध॒ प -	म म ग म	प म ग म	(ग)रे॒ - सा सा
शि व शा ऽ	र द ना ऽ	र द य ह	भा ऽ ष त
०	३	×	२
सा रे॒ ग म	प - प ध॒	रें॒ - सां -	ध॒ प म ग[२३]
ध नि ध नि	नं ऽ द दु	ला ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

४.४.२ राग : मलयमारुतम्

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : मध्यम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : ऋषभ तथा निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : दिन का प्रथम प्रहर

आरोह : सा, रे ग प ध नि सां

अवरोह : सां नि ध - प ग रे सा

पकड़ : ग रे ग प, ग प ध नि ध - प, ग प ग रे - सा

विशेषता : यह एक दक्षिण पद्धति का राग है । दक्षिण में मेलकर्ता १६ चक्रवाक से जन्य राग है । यह अपने यहाँ भी प्रचलित हुआ है । इस राग की उत्पत्ति के विषय में यह कहना उचित होगा की राग 'कलावती' में कोमल रिषभ का प्रयोग करने से अथवा 'अहीरभैरव' राग में मध्यम वर्ज्य करने से इस राग का प्रादुरभाव होता है । इस राग में भैरव, विभास, अहिरभैरव इत्यादि रागों की छाया आती है । 'सा रे रे सा' से भैरव, 'गपधनिधप' से कलावती, 'सा रे ग रे ग प' से विभास इत्यादि राग दिखाई देते हैं । इस राग में 'गपध, निधपध' इस प्रकार धैवत को बार-बार आगे लाकर उस पर न्यास किया जाता है । इस राग के आरोह में निषाद 'ध नि ध सां' इस प्रकार वक्र किया जाता है; तथा बीच-बीच में 'ग प ध नि सां' इस प्रकार सरल प्रयोग भी होता है।[२४] इस राग में कुछ गुणीजन अंतरे पर जाते समय 'ग प ध सां' इस प्रकार जाते हैं । रातंजनकर जी ने 'ग प ध सां' इस प्रकार अंतरे का उठान बताकर आरोह में निषाद अल्प माना है ।[२५]

स्वर विस्तार : सारे-रे-सा - सारेसासा नि़ ध़ - सा रे - ग रे -, सा, ध़ नि़ सा रे ग रे, ग रे ग प - ग, रे सा। सा ग रे ग प, ग प ध नि ध -, प, ध प, ग प, ध, नि ध, सां गपधनि सां, निध सां नि ध प, ध प ग प - ग - रे सा। ग प ध ^नि^ध सां, सां रें - सां, रेंरेंसांनिसांनिध पधनिसांरें सां, सारेगप धनिसां, निधनिसांरें-सां, सांरें -गं- रें सां, रेंरेंसांनिसांरेंसां नि ध प, पधनिसां, गपधनिध सां नि ध प, ध प - गप ग रे सा।[२६]

राग : मलयमारुतम् – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: मोहनी मूरत सोहनी सूरत, जब से निहारी श्याम सुन्दर की ।
अंतरा: बिन देखे कछु कलना परत आली, बनवारी में तोपे वारि ॥

स्थायी

, नि ध प	ध प ग प	ग रे सा सा	सा रे ग प
मो ह नी	मू ऽ र त	सो ऽ ह नी	सू ऽ र त
३	×	२	०
ग प ध ध	धनि सां नि ध	सांरें सांनि धनि धप	गप धप गरे सा-
ज ब से नि	हा ऽ री ऽ	श्याऽ ऽऽ मऽ सुऽ	न्दऽ ऽऽ रऽ कीऽ
३	×	२	०

अंतरा

ग प ध निध	सां - सां सां	सां रें गं रें	सां रें सां सां
बि न दे ऽऽ	खे ऽ क छु	क ल ना प	र त आ ली
३	×	२	०
गं गं रें -	सां सां सां सां	सांरें सांनि धनि धप	गप धप गरे सा-[२७]
ब न वा ऽ	री में तो पे	वाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ रिऽ ऽऽ
३	×	२	०

४.४.३ राग : शिवकली

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : गंधार

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : ऋषभ तथा धैवत कोमल एवं दोनों मध्यम, दोनों निषाद स्वर ।

वादी : ध

संवादी : रे

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा रे म प ध, नि सां

अवरोह : सां नि ध प, मं प ध नि ध, प, म रे सा

पकड़ : सा रे म प, ध ध प, ध नि सां नि ध, प, मं प ध नि ध, प, म रे सा ।

विशेषता : 'मं प ध नि ध, प, म रे सा' यह राग वाचक संगती है। इस राग में गंधार न होने के कारण यह राग रामकलि से भिन्न दिखाई देता है ।

स्वर विस्तार : सा रेरेसानि़सा, नि़ ध, नि़ सा, सा रे सा, सा रे म प, रे म प ध ध प, म प ध - प, ध प म, प म रे सा | सारेममरेसा, रे म प, धनी सां नि ध प,म प म रे सा, पमरेसा रेमपधनिध प, मं प ध, प, म प म रे सा | म प ध, ध, नि सां, सां रें रें सां, सां रें मं रें सां, सां नि ध प, मंप धनि ध प, म प म रे सा |[२८]

राग : शिवकली – एकताल (मध्यलय)

स्थायी : जग करतार सुनो पुकार, बिनती करूँ बार-बार |
अंतरा :तुम तो जग के पालनहार, नैया करो मोरी पार |

स्थायी

ध॒ ध॒	प प	म॑प ध॒नि॒	ध॒ प	म पमरे॒	रे॒ सा
ज ग	क र	ताऽ ऽऽ	र सु	नो पु	का र
सा रे॒	म प	ध॒ नि	नि॒सां रें॒सां	नि ध॒	प प
बि न	ती क	रूँ ऽ	बाऽ ऽऽ	र बा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म प	ध॒ -	नि सां	रें॒ मं	रें॒ सां	नि सां
तु म	तो ज	ग के	पा ऽ	ल न	हा र
सां रें॒	सां नि	ध॒ प	म॑प ध॒नि॒	ध॒प म	रे॒ सा [२९]
नै ऽ	या ऽ	क रो	मोऽ ऽऽ	रीऽ पा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

४.५ पूर्वी थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.५.१ राग : हंसनारायणी

थाट : पूर्वी

वर्ज्य स्वर : धैवत

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : ऋषभ कोमल तथा मध्यम स्वर तीव्र है, बाकि शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे॒

गायन समय : सायंकाल

आरोह : ऩि रे॒ ग म॑ प नि सां

अवरोह : सां नि प म॑ ग रे॒ सा

पकड़ : ऩि रे॒ ग म॑ प, नि प, , प म॑ ग रे॒, ग म॑ प म॑ ग रे॒ सा

विशेषता : यह एक कर्नाटक पद्धति का राग है । धैवत वर्ज्य होने से कोई इसे मारवा थाट का भी मानते है ।

स्वर विस्तार : ऩि रे॒ ग, रे॒ ग म॑ प, ग म॑ प नि प, रे॒ ग म॑ ग, प नि प म॑ ग, म॑ ग रे॒ ग रे॒, सा । ऩिरे॒गगरे॒सा ऩि रे॒ ग म॑ प, प म॑ ग रे॒, ग म॑ प म॑, ग रे॒ सा, ग रे॒ ग म॑ प, नि प, सां नि प, ग म॑ प म॑ ग रे॒ सा ।निनिपप म॑ग रे॒ग म॑प, म॑ प नि प, ग म॑ प नि सां नि प, नि प म॑, प म॑ ग, म॑ ग रे॒, ग रे॒ सा । म॑ प नि प, रे॒ ग म॑ प, गम॑ गम॑ प, नि प सां नि प, प नि म॑ प म॑ ग, म॑ ग रे॒ ग रे॒ सा । प सां, नि रें॒ सां, नि रें॒ सां, नि रें॒ गं, रें॒ सां, रें॒ सां नि प म॑ ग, रे॒ ग म॑ प नि सां, नि प म॑ ग, रे॒ ग म॑, नि प, प सां नि प, गम॑ पम॑ गरे॒ ऩिरे॒ ग, म॑ग, प म॑ ग, नि प म॑ ग , रे॒ ग म॑ ग रे॒, ग म॑ प म॑ ग रे॒ सा ।[30] हंसनारायणी के दो प्रकार है १) मारवा ठाठ जन्य जो औडव-सम्पूर्ण जाति का राग है | इस प्रकार में ध तथा नि

आरोह में वर्ज्य है | जिसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है- सा <u>रे</u> ग मं प सां | सां <u>रें</u> नि प ध मं ग <u>रे</u> सा | २) उपरोक्त जिसका वर्णन किया है वह दूसरा प्रकार है जो पूर्वी ठाठ जन्य राग है |[३१]

राग : हंसनारायणी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : रसिया मोसे काहे को प्रीत लगाईं, अब न रखो तुम मोसे जुदाई|

अंतरा : जबसे मैं देखी तोरी सूरत, तबसे दिल में बस गई मुरत ||

स्थायी

																ऩि
																र
रे	ग	मं	प	मंप	निसां	नि	प	मं	ग	ऩिरे	गमं	प	-	प	-	
सि	या	मो	से	काऽ	ऽऽ	हे	को	प्री	ऽ	तऽ	लऽ	गा	ऽ	ई	ऽ	
३				x				२				०				
ग	मं	प	सां	नि	प	मं	ग	रे	ग	मं	ग	रे	-	सा	ऩि	
अ	ब	न	र	खो	ऽ	तु	म	मो	ऽ	से	जु	दा	ऽ	ई	र	

अन्तरा

प	प	सां	सां	नि	रें	सां	-	नि	रें	गं	रें	सां	-	रें	सां
ज	ब	से	मैं	दे	ऽ	खी	ऽ	तो	ऽ	री	ऽ	सू	ऽ	र	त
नि	रें	गं	रें	सां	नि	प	मं	ग	रे	ग	मं	ग	रे	सा	ऩि[३२]
त	ब	से	ऽ	दि	ल	में	ऽ	ब	स	ग	ई	मु	र	त	र
३				x				२				०			

४.५.२ राग : दीपक (पूर्वी थाट)

थाट : पूर्वी

वर्ज्य स्वर : आरोह में रिषभ तथा अवरोह में निषाद स्वर

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ व धैवत कोमल तथा मध्यम तीव्र बाकि स्वर शुद्ध

वादी : सा

संवादी : प

गायन समय : सायंकाल

आरोह : ऩिरे॒सा, ऩि सा ग प, मं ध॒ प, ग- मंध॒प सां

अवरोह : सां- - प, मं ध॒ मं ग, ग प ग - रे॒ सा

पकड़ : सां-- प, ग, प ग, रे॒ सा एवं सांssप मं ध॒ मं ग-रे॒s सा

विशेषता : यह एक प्राचीन राग है; तथा ग्रंथों में इस राग का वर्णन भी देखने को मिलता है | इसके स्वरुप के संबंध में अनेक मतभेद पाए जाते हैं | इस राग के दो से तीन प्रकार सुनने में आते हैं- १) पूर्वी थाट जन्य २) बिलावल थाट जन्य ३) खमाज थाट जन्य | इन सभी प्रकारों में पूर्वी थाट से उत्पन्न दीपक राग ही ज्यादा प्रचार में है | पूर्वी थाट के इस राग में 'सा रे॒ रे॒ सा', 'सा प', यह श्री अंग लिया जाता है । 'सांध॒- प' यह अवरोहात्मक स्वर इसका अपना वैशिष्ट्य है । इस पूर्वी थाट निर्मित प्रकार के अंतर्गत 'ग प', 'प सां' उसी प्रकार 'सां प' तथा 'प ग' यह स्वर संगतियाँ बार-बार ली जाती है |

स्वर विस्तार: सा ऩि रे॒ सा, ऩि रे॒ सा- ग रे॒ सा, ऩिसा-गगरे॒सा ऩिसाग, मंध॒प, ध॒ध॒प़ मंप़, ऩिसा, ऩिसग–प ग रे॒ सा, ऩिसा, ग, रे॒ सा | ऩिसा, रे॒ रे॒ सा, सा रे॒रे॒सा, प - - मं प, मंपध॒प, मंग मंध॒ मंग, ध॒- मंध॒ मगं, मगं प ग रे॒ सा | सा ऩिसारे॒रे॒सऩिसा रे॒रे॒सा ग मं प-, ध॒प, मंग, मंपध॒ मंपध॒ मंप, मंग, प-ग-रे॒ सा | ऩिसागगरे॒सा ऩिसागमंप, ध॒प, मंग, मंपध॒ध॒पमंप, मंग, प ग रे॒ सा । गग मंध॒प सां, सां, निरें॒सां, रें॒रें॒सां, निरें॒सां, निसांगं , मंगं, मं गं रें॒ सां, सां - ध॒प , मंग, प ध॒ प, पध॒पसां - प मंग, मंग, मंग प ग रे॒ सा, ऩिसागरे॒साप- ।[33]

बिलावल थाट निर्मित : इस प्रकार में दोनों निषाद का प्रयोग होता है | दीपक का यह जो प्रकार है वह कम सुनाई देता है | इस प्रकार के अन्तर्गत बिहाग तथा झिंझोटी राग का मिश्रण है, इस राग का विस्तार मंद्र तथा मध्य सप्तक में ही होता है ।[34] इसके आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है, कुछ गुणीजन इसे खमाज थाट का भी मानते हैं, इस बिलावल थाट युक्त दीपक राग का वादी-संवादी 'ग नि' है तथा निषाद पर न्यास होता है; तथा इस राग के आरोह में रिषभ वर्ज्य होने के कारण इस राग की जाती षाडव-संपूर्ण मानी जाती है | इसके आरोह में धैवत स्वर का वक्र प्रयोग होता है | मतलब "पधनिसां" इस प्रकार सीधे न करके "पधपनिसां" इस तरह वक्र रूप से अथवा इसे दुर्बल मानकर "पनिसां" इस तरह से आरोह किया जाता है | बिच में कभी-कभी 'प़ध़सा' इस प्रकार 'ध़सा' की संगती द्वारा धैवत का सरल प्रयोग भी आरोह में किया जाता है | इसका गायन समय रात्री का दूसरा प्रहर माना गया है | इस बिलावल थाट युक्त प्रकार में शुद्ध रे, शुद्ध ग, शुद्ध म, पंचम, शुद्ध ध तथा दोनों निषाद का प्रयोग होता है | इस राग में 'ऩि॒ ध़ - प़ ध़ सा - ऩि॒ ध़ प़ -' यह झिंझोटी का अंग है तथा 'सा ग - ग म प म ग - ग रे सा' यह बिहाग का अंग है |

आरोह : सा, ग, म प, ध प, नि सां |

अवरोह : सां नि॒, ध प, म ग, रे सा |

पकड़ : प़, म़ प़, ध़ प़, नि़, सा, ग म प, म ग, रे सा, नि॒, ध़ प़, नि़ सा, प म ग रे सा |

बिलावल मेल जन्य दीपक राग का चलन इस प्रकार है :-

प़, म़प़, ध़, प़नि़ - सा, सा ग, रेसा, ग -म प, धप, नि॒धप, गम, पमग, रे सा, नि॒, ध़, प़ध़सा, सा, ग म प, म ग, रे सा, नि॒, ध़ प़, नि़ सा |

कल्याण थाट निर्मित : इस प्रकार में निषाद वर्ज्य है | इस प्रकार का ठोस स्वरुप प्राप्त नहीं है |[३५]

खमाज थाट निर्मित : खमाज थाट निर्मित दीपक राग में शुद्ध रिषभ, शुद्ध गंधार, शुद्ध मध्यम, शुद्ध धैवत तथा दोनों निषाद का प्रयोग होता है | शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह में तथा कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में होता है | दीपक के इस प्रकार में भी आरोह में रिषभ वर्ज्य है | इस प्रकार में ‘ध म प’ आरोह में तथा ‘म प ध म’ एवं ‘ध म प ग’ स्वरों का अवरोह में वक्र संचार होता है | ‘ध म’ संगती का बार-बार प्रयोग किया जाता है | ‘सा म’ तथा ‘प ग’ की संगती का भी प्रयोग देखने को मिलता है |

आरोह : सा ग म प ध म प नि नि सां |

अवरोह : सां नि॒ ध प म प ध म प ग रे सा |

खमाज थाट के दीपक राग का चलन कुछ इस प्रकार है :-

स्थायी : सा - नि॒ ध़ प़ - ध़ म़ प़ - नि़ नि़ सा | सा म ग रे सा - ग म प म - ग रे सा | सा ग म प - ध प - नि॒ ध प म - ग रे सा, ग म प ध म - प ग रे सा |

अंतरा : म प - ध म प नि नि सां सां, सां, मं गं रें सां - सां नि॒ ध प - म प ध प - नि॒ ध प - म ग रे सा, सा ग म प ध म प ग- रे सा |

(बिलावल थाट के दीपक राग में 'प ग रे सा' इस स्वर समूह का प्रयोग नहीं होता) (पूर्वी थाट के दीपक राग में श्री, जेताश्री, रेवा तथा पूर्वी राग की छाया दिखाई देती है | जैसे - श्री- सा, रे॒ रे॒ सा, प; जेताश्री - नि़ सा ग प; रेवा - गs रे॒s सा, सा ग प; पूर्वी- सा, म॑ प - ध॒ प, म॑ ग - रे॒ सा | इस प्रकार में 'सा रे॒ रे॒ प म॑ तथा नि रें॒ नि ध॒ प' इस स्वर समूह वाली श्री राग की लक्षनिकता का प्रयोग नहीं किया जाता) |[३६]

राग : दीपक (पूर्वी थाट) - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : नसीरुद्दीन रोशन चिराग तुमरो द्वार बार-बार जाऊँ रखियो मोरी लाज ।

अंतरा : सप्त सुरन को ज्ञान दीजो, दोउ जग में मान दीजो, बिनती करत यही निसार ।

स्थायी :

प प	ध॒ प	प प	प ग	प ग	रे॒ सा
न सी	रु द्दी	न रो	श न	चि रा	ऽ ग
×	०	२	०	३	४
सा प़	प़ सा	- सा	पप ग	प ग	रे॒ सा
तु म	रो द्वा	ऽ र	बाऽ ऽ	र बा	ऽ र
×	०	२	०	३	४
- ध॒प	सां रें॒	सां सां	पप पग	प ग	रे॒ सा
ऽ ज़ाऽ	ऊँ र	खि यो	मोऽ ऽऽ	री ला	ऽ ज
×	०	२	०	३	४

अंतरा

प -	सां सां	सां सां	सां सांनि	रें॒ सां	- सां
स ऽ	प्त सु	र न	को ज्ञाऽ	न दी	ऽ जो
×	०	२	०	३	४
गं रें॒	सां सांनि	रें॒ सां	प मं	ध॒ प	- प
दो ऽ	उ जऽ	ग में	मा ऽ	न दी	ऽ जो
×	०	२	०	३	४
सांनि रें॒	सां पमं	ध॒ प	प पग	प ग	रे॒ सा[३७]
बिऽ न	ती कऽ	र त	य हीऽ	नि सा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

४.५.३ राग : श्रीटंक

थाट : पूर्वी

वर्ज्य स्वर : मध्यम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ तथा धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा अथवा रे

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा रे प, प ध प सां

अवरोह : सां नि रें नि ध प, ग रे, ग रे सा

पकड़ : रे रे प, नि ध प, ग रे सा

विशेषता : श्री राग में मध्यम वर्ज्य करने से इस राग का स्वरुप सामने आता है । यह श्री राग का ही एक प्रकार है |

स्वर विस्तार : सा , रे रे सा, रे ऩि ध़ प़, प़ ऩि, सा रे सा। रे प, प ध - प, ध प - रे सा । सा रे रे प, ग रे ग प, प ध प, धपपप नि, रें नि ध प, ग प, प ध प, गरे गरे सा । सा, रे प, ग रे ग प, नि ध प, रें नि ध प, सां, निरेंसां, रें गं, पं रें, गं रें सां, रें नि ध प, ध प रे, रेग रेरे प, प, गरे, गरे सा। ऩिसारेगरेसाऩिसारेगपधपप निसां, निरेंसां, रेंगं रेंरें पं रें, गं रें, नि रें नि ध प, पध रेंनिधप, परे, ध प रे, गपग रे रे सा।[३८]

तिरबन (त्रिवेनी) में रिषभ तथा पंचम वादी-संवादी होने से, उसी प्रकार पूर्वी थाट की गौरी में गंधार वर्ज्य है । उसी प्रकार मालवी के आरोह में निषाद तथा अवरोह में धैवत वर्ज्य है (भातखंडे जी ने मालवी के आरोह में 'नि' दुर्बल तथा अवरोह में 'ध' दुर्बल बताया है तथा इसे श्री अंग का राग

बताया है) । मालवी में भी वादी ऋषभ तथा संवादी पंचम होने से तथा श्री राग के आरोह में गंधार तथा धैवत वर्ज्य होने के कारण यह राग इन सब से अलग दिखाई देता है । यह राग दो-तीन नामों से जाना जाता है 'टंकिका' 'टंकरा' 'टंकश्री' इत्यादि । एक तीव्र मध्यम वाला भी प्रकार है । जिसका विवरण राजा नवाब अली कृत 'मारिफुन्नगमात-(प्रथम भाग)' के अंतर्गत दिया गया है।[३९] भातखंडे जी ने 'क्रमिक पुस्तक-मलिका, भाग ५' में इस राग को सम्पूर्ण जाति का राग माना है | तथा श्री-अंग का राग बताया है| त्रिवेणी तथा श्रीटंक यह दोनों वादी-संवादी भेद के कारण एक दूसरे से भिन्न दिखाई देते हैं; त्रिवेणी में वादी ऋषभ है, तथा श्रीटंक में वादी पंचम है | श्रीटंक में मध्यम लगाया जाय तो भी वह गौण ही रखना पड़ता है । त्रिवेणी की तरह इस राग का उल्लेख भी प्राचीन ग्रंथों में देखने को मिलता है।[४०] इस राग की जाति कुछ इस प्रकार भी मानते हैं - १) औडव-सम्पूर्ण, आरोह-अवरोह- ग रे- सा रे- सा ग- प ध- प सां | सां- नि ध- प- मं ग- प-ग-रे सा | २) औडव-षाडव, आरोह-अवरोह- ग रे- सा रे- सा ग- प ध- प सां | सां- नि ध- प, पग- पग - रे सा | ३) षाडव-समूर्ण, आरोह-अवरोह- ग- रे सा- रे सा- ग प- ध प- नि सां | सां- नि ध- प- मं ग- प - ग - रे सा |[४१]

राग : श्रीटंक – (द्रुत एकताल)

स्थायी: पित वसन कुंद दसन प्रिया सहित कंठ माल मुकुट शीश मोर पंख चाहिजी ।

अंतरा: अकथ कथा कथी न जाय तीन लोक रहया समाय स्वते सिद्ध रूप धर्यो शाहन के शाहजी ।।

स्थायी

रे	-	रे	प	प	प	प	ध	प	रे	ग	रे
पि	ऽ	त	व	स	न	कुं	ऽ	द	द	स	न
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	-	रे	रे	रे	प	-	प	ध	प	प
प्रि	या	ऽ	स	हि	त	कं	ऽ	ठ	मा	ऽ	ल
×		०		२		०		३		४	
प	प	ध	नि	रें	नि	ध	नि	ध	प	-	प
मु	कु	ट	शी	ऽ	श	मो	ऽ	र	पं	ऽ	ख
×		०		२		०		३		४	
प	-	ध	-	रे	-	ग	प	धप	गरे	सा	-
चा	ऽ	हि	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प प	नि नि	सां -	रें रें	रें गं	रें सा
अ क	थ क	था ऽ	क थी	न जा	ऽ य
×	०	२	०	३	४
रें गं	रें सां	- नि	रें नि	- रें	नि ध
ति ऽ	न लो	ऽ क	र ह्या	ऽ स	मा य
×	०	२	०	३	४
प प	- रे	- रे	प -	प ध	प -
स्व ते	ऽ सि	ऽ द्ध	रू ऽ	प ध	यों ऽ
×	०	२	०	३	४
नि रें	नि ध	प -	प रे	रे ग	रे सा[४२]
शा ऽ	ह न	के ऽ	शा ऽ	ह जी	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

४.५.४ राग : त्रिवेणी

थाट : पूर्वी

वर्ज्य स्वर : मध्यम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ तथा धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा रे, रे सा, सा रे, ग प, ग प, ध प सां

अवरोह : सां नि ध प, प ग, रे रे सा

पकड़ : सा रे प, ध प सां, नि ध प, ग प ग रे अथवा

[ग]रे, [ग]रे, प, धप, गरे, गप गरे [ग]रे सा

विशेषता : यह राग श्री- अंग से गाया जाता है | विशेषकर इसमें भक्ति रस के गीत गाये जाते हैं | इस राग के निकट 'श्री' राग है | तीव्र मध्यम वर्ज्य होने के कारण श्री राग की 'मं प नि सां' स्वर संगति इस राग में नहीं आती है | पटवर्धन जी ने वादी स्वर 'सा' माना है |

स्वर विस्तार : सा, रे नि ध प, सा, सारे, रेगप, रेग-रे सा | सा, ऩिरेगरे, गप, पधप, निधप, रेंनिधप, पगरे, गपगरे सा | पप ध प, पसां, सां - रेंसां, सां रें रें पं रें, गं रें सां, रेंनिधप, निधप,पधपप धपप रे प, प रे, ग रे सा|[४३]

चलन : सा रे, रेसा, सारे, गपग, रे, सा, प, प, धप,सां, निध, प, पग, रेरेसा| यह राग अवरोही वर्ण में ज्यादा शोभायमान है | यह एक प्राचीन एवं

अप्रचलित राग है | मध्यम वर्ज्य होने के कारण स्वाभाविक 'गप' संगति सामने आती है | इस राग में 'रे प' संगति भी दिखाई देती है |[४४]

त्रिवेणी - झपताल (विलंबित)

स्थायी

रे	रे	रे	प	प	रे	ग	रे	सा	-
अ	ब	ना	ऽ	र	हूँ	ऽ	मै	ऽ	ऽ
सा	-	रे	-	ग	प	ग	रे	सा	-
तो	ऽ	रे	ऽ	न	ग	रि	या	ऽ	ऽ
रे	-	ग	प	-	प	-	ध	प	-
ना	ऽ	ह	क	ऽ	मो	ऽ	री	ऽ	ऽ
सां	(ध)प	प	ग	प	धध	पप	रे	गरे	सा
ला	ऽ	ज	लि	ऽ	वैंऽ	ऽऽ	या	ऽऽ	ऽ
×			२		०		३		

अंतरा

प	प	ध	प	प	नि	सां	रें	(नि)सां	सां
नि	प	ट	ऽ	नि	ठु	र	तुँ	ऽ	तो
नि	-	रें	-	गं	रें	सां	रेंनि	ध	प
पि	ऽ	या	ऽ	स	दा	ऽ	रंऽ	ऽ	ग
ध	-	नि	सां	सां	रें	नि	ध	प	प
जा	ऽ	न	ऽ	त	हैं	ऽ	स	ऽ	ब
सां	प	(ध)प	ग	प	धध	पप	रे	गरे	सा[४५]
ब्र	ज	के	ऽ	लु	गैंऽ	ऽऽ	या	ऽऽ	ऽ
×		२			०		३		

४.६ मारवा थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.६.१ राग : ललितावरी

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ कोमल तथा दोनों मध्यम लगते हैं बाकी सब शुद्ध

वादी : ध

संवादी : ग

गायन समय : रात्री का अंतिम प्रहर (उत्तर रात्री)

आरोह : ऩि रे॒ ग म, म॑ म ग, म॑ ध नि सां

अवरोह : सां नि रें॒ नि ध, म॑ ध म॑ म ग, रे॒ ग म॑ ग रे॒ सा

विशेषता : इस राग का पूरा चलन ललित राग का ही है । ज्यादातर ललित में धैवत कोमल लिया जाता है । इस राग में धैवत शुद्ध है । ललित से अलग रखने के लिए इसमें पूर्वांग में 'म म॑ म ग, म॑ म रे॒ग' इत्यादि तरह से गंधार पर तथा उत्तरांग में धैवत पर न्यास किया जाता है; जिस कारण ललित से अलग दिखाई देता है | इस राग में हिंडोल अंग भी दिखाई देता है ।

विस्तार : स ऩिरे॒ सा, रे॒ ऩि ध़, म़॑ ध़ सा, ऩि रे॒ सा, ऩि रे॒ ग, म॑गरे॒ग, म॑ग रे॒ सा। ऩिरे॒गम॑ ध, ध म॑ ग, गम॑ध नि धम॑ग, म॑रे॒ ग रे॒ सा। ऩिरे॒गम॑ध नि ध, म॑ध सां निरें॒सां, सांरें॒निसां नि ध, म॑धनिम॑ध नि ध म॑ ग, गम॑धम॑ग

म रेंग, मं ग रे सा। ऩिरेगगरेसाऩिधऩिरेगमंधनिसां निरेंसां निरेंगं रेंमं गं रेसां, सां, निरेनि ध, निधमंग म मं ग रेंग, रेग मंग रे सा।[४६]

राग : ललितावरी - एकताल (विलंबित)

स्थायी: भला जागरे सारी रैन बिहानी। जात जन्म अंजलिको पानी।
अंतरा: चंद्र सूरज तुझे कह समझावे। पल-पल औध घटत निज जावै।

स्थायी

मं-गरे गरेसाऩिरे	मंगरेग- धमंमं-	रेग मरेसा-सा	निरेग- मं-धमं
भऽलाऽ ऽजाऽग	रेऽऽऽ सारीरैऽ	न बिहाऽनी	जाऽतऽ जऽऽन्म
४	×	०	२

धनिनिध निरें	रेंनिध- मंमगरेग
अंऽजलि कोऽ	पाऽऽऽ नीऽऽऽ
०	३

अंतरा

मं-धसां सांसांनिसांसां	सां सांसांसांसां	रेंसां निध	सांसांगंगं मंगंरेंसां
चंऽद्रसू रजऽतु	झे कहसम	झा वे	पल पल औऽऽध
४	×	०	२

निरेंनिध धनिरें-	रेंनिध- मंमगरेग [४७]
घटतनि तजाऽऽ	वैऽऽऽ ऽऽऽऽ
०	३

४.६.२ राग : पंचम

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ कोमल तथा दोनों मध्यम लगते हैं बाकी स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्री का अंतिम प्रहर (उत्तर रात्री)

विशेषता : इस राग के दो प्रकार हैं- १) पंचम वर्ज्य प्रकार २) संम्पूर्ण प्रकार । दोनों प्रकारों में दोनों मध्यम लगते हैं तथा दोनों ही ललित अंग से गाये-बजाये जाते हैं । यह एक उत्तरांग प्रधान राग है | षाडव प्रकार में कुछ विद्वान रिषभ को दुर्बल रखते हैं | षाडव प्रकार में हिंडोल अंग मानते है। प्राचीन ग्रथों में यह भैरव थाट के अंतर्गत वर्णित किया गया है | उठान : म॑ ध - सां, नि ध -, म॑ ध -, म॑ ग, रे॒ सा, सा म ग, म॑ ध, नि ध -, नि म॑ ध।

चलन : म॑ ध सां, सां, सां नि ध -, म॑ ध म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा । नि़ सा म -, म॑-, म ग, म॑ ध - सां, नि ध नि - म॑ ध -।[४८]

इसके अन्य प्रकारों में, जैसे की बसन्त अंग, सोहनी अंग इत्यादि अंग से गाया हुआ देखने को भी मिलता है ।

स्वर विस्तार : सा -, नि़ रे॒ सा, सा म, म-म॑-म-ग, म॑-ध-म॑-म-ग, म॑ ग रे॒ सा। सा-मग, म॑ ध म॑ म ग, म॑ध सां - निरें॒-सां, सां नि ध -, म॑ध-म॑-म-ग, म॑ ग रे॒ सा। म॑ ध सां - नि रें॒ - सां, गं-रें॒-सां, सां रें॒ - नि-ध-म॑-म-ग, गम॑ नि-

ध-म॑-ग, गम॑ ध-म॑-ग, म, म॑-म-ग, म॑-ग-रे॒-सा। म॑ म॑ध सां निरें॒सां, रें॒निधम॑ध सां, सारें॒गंरें॒सां, म॑ गं, म॑ग, मनीधम॑ मग, म॑गरे॒सा |[४९]

पंचम राग के कई प्रकार देखने को मिलते हैं, जैसे -

१) औडव-षाडव जाति का पंचम राग जिसमें पंचम वर्ज्य है तथा आरोह में रिषभ वर्ज्य है | इस प्रकार के पंचम का आरोह-अवरोह - सा म ग म॑ ध, नि ध, नि म॑ ध, सां | सां, नि ध, म॑ ध, म॑ ग रे॒ सा | इस में दोनों मध्यम का प्रयोग होता है | परन्तु ललित की तरह दोनों मध्यम एक साथ नहीं लिए जाते हैं | इस प्रकार में हिंडोल अंग 'नि म॑ ध सां' भी है | इस प्रकार का चलन- म॑ ध सां - नि ध - म॑ ध - म॑ ग - रे॒ सा - सा म - ग म॑ ध - नि ध - नि म॑ ध | म॑ ध - सां - सां नि ध - म॑ ध म॑ ग - म॑ ग रे॒ सा - नि सा म - म - म ग - म॑ ध सां - नि ध म॑ ध |

२) षाडव-षाडव जाति का पंचम राग जिसके आरोह में निषाद तथा अवरोह में पंचम वर्ज्य है | इस प्रकार के पंचम का आरोह-अवरोह - सा - रे॒ सा - म - म- म ग - प - म॑ ध सां - रें॒ सां - रें॒ नि ध - म॑ ध म॑ म - म ग - म॑ ग रे॒ सा | इस पंचम राग के प्रकार में शुद्ध मध्यम का प्रयोग 'म ग प' इस प्रकार आरोह में होता है; 'ग म प' इस तरह नहीं होता | अवरोह में ललित की तरह दोनों मध्यमों का प्रयोग 'म॑ ध म॑ म - म ग' इस तरह होता है; कुछ गुणीजनों का कहना है की इस तरह से दोनों मध्यमों का प्रयोग नहीं करना चाहिए| **चलन** - ग - रे॒ सा - नि॒ रे॒ ग - म प म ध - म॑ ग - रे॒ सा | ग - म॑ ग - रे॒ सा - म - म - म ग प - म॑ ध म॑ म - म ग - म॑ ध सां - रें॒ सां - रें॒ नि ध - म॑ ध म॑ म ग - रे॒ ग - म॑ ग रे॒ सा |

३) तीसरा जो प्रकार है इसे हिंडोल अंग वाला पंचम राग कहते हैं | इस प्रकार के अंतर्गत रिषभ तथा पंचम का प्रयोग नहीं होता | इस राग का **चलन** - म॑ ध - सां नि ध म॑ - ग ग ऽ सा - सा ऽ ध म॑ ग ऽ -

सा म म म - ग ग म॑ ध - नि ध सां नि - ध म॑ ग ग ऽ सा | म ध म॑ ध - सां सां ऽ - सां गं सां नि - ध म॑ - ग म॑ - ध नि - म॑ ध - ग म॑ ग सा |

४) चौथा जो प्रकार है इसे सोहनी अंग वाला पंचम राग कहते हैं | इस प्रकार में भी पंचम नहीं लिया जाता है | इस प्रकार में फ़क्त तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है | कोमल रिषभ का भी प्रयोग होता है | **चलन** - सा ग, म॑ ध सां, ध सां, रें॒ नि ध म॑, ग रे॒, ग म॑, ध सां, सां नीं, रें॒ सां नि ध, म॑ म॑ ध नि, म॑ ध म॑ ग ऽ सा | म॑ ध नि सां, नि सां सां ऽ, सां रें॒ सां गं सां, नि रें॒ नि ध, म॑ ध नि म॑ ध - म॑ ग सा |

५) इस पाँचवें प्रकार में पंचम स्वर का प्रयोग होता है तथा फ़क्त शुद्ध मध्यम ही लिया जाता है | इस प्रकार के पंचम राग का चलन - म ध नि ध, म म ग म, म ऽ प प, ग रे॒ सा, ऩि ध़ ऩि सा, म ऽ म, म, म ऽ ध ध, म प ग ऽ, म म प प, ग रे॒ सा | म म ध ध नि नि सां, सां रें॒ सां रें॒ निऽ सांऽ मं मं गं रें॒, सां रें॒ सां ऽ नि ऽ नि - नि सां ध म, म ऽ म ग, पप गग मग रे॒सा |[५०]

राग : पंचम - (षाडव प्रकार) - एकताल (विलंबित)

स्थायी: देखो प्यारी बिपिन में, कैसी छबि छाय झुकि रही लता अति लगत सुहावनी।

अंतरा: फूले फूल रंग रंग, भँवर गुंजार करें ठौर ठौर कोकिला बोलत मन भावनी।

स्थायी

गम॑ धसां	निरें॒ सां	निनिध- नि	[ध]म॑ग -	म॑ग रे॒सा	- मम॑म॑-
देऽ खोऽ	प्याऽ री	बिपिनऽ ऽ	मेंऽ ऽ	कैऽ सीऽ	ऽ छबिछा
४	×	०	२	०	३

म॑ग-ग [ध]म॑	धनिसां- -	नि रें॒सां—	नि-रें॒नि ध	म॑गम- म॑म॑ग-
ऽऽऽय झु	किरहीऽ ऽ	ऽ लताऽऽ	ऽऽअति ऽ	लगतऽ ऽऽऽऽ
४	×	०	२	०

ग-गम॑धम॑ गरे॒सा-
सुऽहाऽऽऽ वनीऽऽ
३

अंतरा

म॑-धसां -सांसांसां	निरें॒सां- सांसांनिध	म॑धनिध म॑गरे॒सा
फूऽलेफू ऽलऽरंग	रंऽग, भँवरऽ	गुंजाऽर करेंऽऽ
४	×	०

निरे॒गम॑ग-म॑- गगम॑ध	निरें॒सां- म॑ंगंरें॒सां	[नि]धनिम॑ग म॑गरे॒सा ५१
ठौऽऽऽरऽ ठौऽ ऽरकोऽ	किलाऽऽ बोऽलत	मनभाऽ ऽवनीऽ
२	०	३

४.७ काफ़ी थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.७.१ राग : नट सारंग

थाट : काफी और बिलावल से मिश्र मेलोत्पन्न

वर्ज्य स्वर : धैवत स्वर वर्जित

जाति : षाडव-औडव तथा षाडव

स्वर : दोनों निषाद बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रे, ग, म, मप, नि, सां

अवरोह : सां नि़ प, म रे, नि़, सा अथवा सां, नि़प, म, रेगमप, म, रे नि़ सा

पकड़ : सारे, रेग, गम, मप, नि़प, म, रे नि़, सा

विशेषता : यह सारंग का एक अल्पप्रचलित प्रकार है | इस राग में नट तथा सारंग का मिश्रण है | इस राग के पूर्वांग में 'सा रे ग म', 'सारे रेग गम', 'सागम' इत्यादि नट अंग की आरोहात्मक स्वर संगतियों में गंधार का प्रयोग किया जाता है | बाकी का शेष चलन सारंग अंग से होता है | इससे स्पष्ट है की आरोह में पूर्वांग में नट तथा उत्तरांग में एवं अवरोह में सारंग अंग से स्वर विस्तार होता है | आरोह में 'ध' तथा अवरोह में 'ध ग' वर्ज्य होने के कारण इसकी जाति षाडव-औडव है | कई गुणीजन अवरोह में भी बीच-बीच में 'प रेगमपम' यह 'प रे' संगति तथा 'पमगमरेसा' इस प्रकार गंधार का वक्र अल्प प्रयोग करके, सारंग तथा नट का मिलाजुला रूप दिखाकर षाडव जाति का राग मानते हैं | इस राग का विस्तार करते समय बीच-बीच में कई बार गंधार छोड़कर सारंग अंग से भी प्रस्तार किया

जाता है | इस राग में मध्यम स्वर मुक्त है | इस राग में अरोहात्मक निषाद शुद्ध तथा अवरोहात्मक कोमल निषाद का प्रयोग होता है |

स्वर विस्तार : सा, रे ग म प, म, प, रे, मप, नि̲, प, नि - सां, नि̲ प, नि̲ - प म रे, प म रे, म प-, नि̲, प, नि- सां-, रें सां, नि̲, प, म प नि, सां, रें, सांरें, नि, सां, नि̲ प, म रे, प, रे ग म प, म, ग मरे, ऩि, सा | सरे रेग गम मप, नि̲ प, मरे, रे ग म प, नि - सां, रें सां, नि̲ प, मरे, पमरे, ऩि, सा | सां - नि̲ प, म रे, रेगम प, ग म रे, ऩि, सा |[५२]

राग : नट सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मन मंदिर में मूरत उनकी हर दिन करत पूजा आरती दरस करू जब जी चाहे |
अंतरा : मन की बात उनको कहू मैं ज्ञान भरी मुस्कान चाहू मैं, अब न कोई शिकवे आली ||

स्थायी

नि̱
म

प म रे सा	(म)रे - - (म)रे	ग रे रेग प-	म रे सा प़
न मं दि र	में ऽ ऽ मू	ऽ ऽ रऽ ऽत	उ न की ह
३	×	२	०
प़ नि़ सा नि़	सा सा सा (ग)रे	ग रे गम प-	गम रे सा रे
र दि ऽ न	क र त पू	ऽ ऽ जाऽ ऽऽ	आऽ र ती द
३	×	२	०
ग म प प	नि̱प - नि नि	सां नि सां नि̱	पनि̱ पम रे नि̱
र स ऽ क	रूऽ ऽ ज ब	जी ऽ चा ऽ	हेऽ ऽऽ ऽ म
३	×	२	०

अंतरा

रे
म

रे ग म प	नि̱ - प -	म प नि नि	सां नि सां -
न की ऽ ऽ	बा ऽ त ऽ	उ न को क	हू ऽ मैं ऽ
३	×	२	०
रें गं गं मं	रें - सां नि	सां नि सां (रें)सां	सांनि सां नि̱ प
ज्ञा ऽ न भ	री ऽ मु स	का ऽ न चा	ऽऽ हू मैं ऽ
३	×	२	०
प प रें रें	रे रे ग म	म प नि̱नि̱ पम	पनि̱ पम रे नि̱[53]
अ ब न को	ई ऽ शि क	वे ऽ आऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ली म
३	×	२	०

४.७.२ राग : मियांकी सारंग

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : गंधार स्वर वर्जित

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : दोनों निषाद बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : ऩिसा, रे, म प, नि॒, धनि सां

अवरोह : सां, नि॒धनि॒प, धप, मरे, पम रे, ऩि, सा

पकड़ : रे, म प, नि॒धनि॒प, मरे, सा, ऩि॒, ध़ ऩि, सा

विशेषता : सारंग का यह एक अप्रचलित मधुर, रंजक प्रकार है जो मियामल्हार के मिश्रण से बना है | कहा जाता है की इसके प्रचारक तानसेन थे | इस राग में शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह में तथा कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में किया जाता है | धैवत स्वर का प्रयोग आरोहात्मक ढंग से मियाँमल्हार अंग से 'ऩि॒ ध़ ऩि॒ ध़ ऩि सा' 'म़ प़ ध़ ऩि सा' 'ऩि॒, ध़ सा ऩि सा' इस तरह आरोह में तथा अवरोह में 'नि॒धनि॒प' इस प्रकार वक्र तथा कभी कभार 'प, धप, मरे' इस संगति में पंचम के साथ सरल प्रयोग किया जाता है | इस राग में रेप, रेमप, परे, इत्यादि स्वर संगति का प्रयोग बार-बार होता है |[५४] इस राग में 'रेप' तथा 'रेम' यह स्वर-संगती सारंग अंग दर्शाती है | 'ऩि॒ध़ ऩि॒ध़, सा' यह स्वरावली इस राग में महत्त्वपूर्ण है | कहा जाता है की इस राग को तानसेन ने प्रचार में लाये इस वजह से इसे 'तानसेनी सारंग' भी कहते हैं |

स्वर विस्तार : सा, ऩि सा, ^म^रे, पमरे, सा, ऩि सा, ^ऩि^ध़^ऩि^ध़ ऩिप म़प़, ^ऩि^ध^ऩि^ध ऩि सा | सा, रे, मरे, सा, ऩि सा, सारे, मरे, पमरे, ऩि, सा, सारेम रेमप, प, धप, मरे, मपमरे, रेम, रेप, मप, पमरे, ऩि, सा, ऩि ध़ ऩि, सा, ऩि म़प़, ऩि ध़ सा ऩि सा | रे, मरे, पमरे, ऩि, सा, रे, मप, निध निध, नि, प, मपनि, धनि, सां, नि सां, नि प, निमप, धप, मरे, पमरे, ऩि सा, मप^नि^ध, नि, सां, रें सां, सां,^नि^ध, नि प, मपमरे, सा, ऩिसा, रे, मरे, सा |[55]

राग : मियांकी सारंग

स्थायी : बन ठन आये, आये हो मेरो मन भाये हो |

अंतरा : भृकुटी भाल गले माल बिराजे मुख से बिन बजाये ||

स्थायी

			नि̱
			ब
प म रे सा	रे - - -	सा - नि̱ ध़	ऩि सा - ऩि
न ठ ऽ न	आ ऽ ऽ ऽ	ये ऽ आ ऽ	ये ऽ हो मे
३	×	२	०
सा रे म रे	प - नि̱ ध	नि - सां -	नि̱नि̱ पम रे नि̱
रो म ऽ न	भा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	येऽ ऽऽ हो ब
३	×	२	०

अंतरा

			म म प नि
			भृ कु टी भा
- नि सां सां	सां - सां सां	रें - सां -	रें मं रें सां
ऽ ल ग ले	मा ऽ ल बि	रा ऽ जे ऽ	मु ख से ऽ
३	×	२	०
नि̱ - म प	नि̱ - - ध	नि - सां -	नि̱नि̱ पम रे नि̱[56]
बि ऽ न ब	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	येऽ ऽऽ ऽ ब
३	×	२	०

४.७.३ राग : अंबिका सारंग

थाट : काफ़ी और कल्याण

वर्ज्य स्वर : गंधार स्वर वर्जित

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : दोनों निषाद एवं दोनों मध्यम बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रे, मं प, ध, नि सां, नि सां

अवरोह : सां निधप, मंप, मरे, ऩि सा

पकड़ : रे, मंपधनिध, प, धमं, प म रे, प रे, सा रे, ऩि, सा

विशेषता : सारंग का यह एक आधुनिक प्रकार है जो काफ़ी तथा शुद्ध सारंग के मिश्रण से बना है | इस राग में शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह में तथा कोमल निषाद का प्रयोग आरोह-अवरोह दोनों में किया जाता है | इस राग के उत्तर भाग की 'पधनि, धनिसां निसां, रेंनिधप' इन स्वरावली द्वारा राग काफ़ी की छाया समक्ष प्रस्तुत होती है | इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम लिया जाता है | 'मंपध निधपमंप, सांनिधप, धमंप, पधनिसां निसां, निधप, मरे, परे, ऩि, साऩि' इत्यादि रागवाचक स्वर संगति बार-बार आती रहती है | इस राग की संकल्पना पं.चिदानंद नगरकर जी की है | इस राग की रचनाओं में द्रुत त्रिताल में 'नजर लागी मोहे पियाकी' तथा विलंबित एकताल में 'जा दिन सों मिले श्याम' यह है |[७७]

पं. रामाश्रय झा कृत 'अभिनव गीतांजलि' भाग तीन के अन्तर्गत पृ. १९१, पर राग 'सरस्वती सारंग' का विवरण किया है; जिसके अन्तर्गत 'सरस्वती सारंग' राग यह शुद्ध सारंग, सारंग, कल्याण तथा सरस्वती कल्याण एवं झिंझोटी का मिश्रण माना है | काफी ठाठ के अन्तर्गत रखकर फ़क्त कोमल निषाद का प्रयोग किया है | इसके अन्तर्गत गंधार वर्ज्य करके जाति षाडव मानी है, तथा राग स्वरुप 'सा, रे नि़ नि़ ध़ सा, मरे - म रे, रे मं प, मरे म रे, मं प ध नि - ध सां, रें नि - ध प, मं प ध नि ध प, रे मं प म रे, म रे नि़ नि़ ध़ सा' इस प्रकार दिखाया है |[५८]

राग स्वरुप : नि़ सा रे - सा, नि़ ध़ प़, मं प़ ध़ नि़ सा, नि़, सा रे, म रे, मं प, ध, निध प, मं प, ध, नि सां, नि सां, रेंनि, ध, प, मंप, रे, मं प, ध प, मंप, रे, मरे, पमरे, नि़, सानि़, रे, सारे, नि़, सा | नि़, सा रे, म रे, मं, प, ध, निध, प, पधनीसां, नि, सां, रेंनि ध प, मंप, नि, सां, रें, मं रें, पं मं रें, नि, सां, रेमं प, नि, सां, रेंनि ध प, धमं, प, रे, रेमंपधनि, धनि, सां, नि, सां, रें सां, निध, प, मंप, ध, निध, प, मंप, रे, मरे, परे, सारे, नि़, सारे, नि़, सा |[५९]

अंबिका सारंग - त्रिताल

स्थायी : नजर लागी मोहे पिया की, कैसे धरुँ धीर जिया |

अंतरा : रैन अंधेरी जिया डर पावे, कैसे जाऊँ मिलन रसिया ||

स्थायी

			रे
			न
ऩि सा रे म॑	प - - -	प - ध म॑	प - - म
ज र ला गी	मो ऽ ऽ ऽ	हे ऽ ऽ पि	या ऽ ऽ की
रे - सा -	ऩि सा रे म॑	प नि॒ ध प	ध म॑ प रे
ऽ ऽ ऽ ऽ	कै से ध रुँ	धी ऽ र जि	या ऽ ऽ न
३	×	२	०

अंतरा

म॑ प नि नि	सां - - -	- - निसां -	सां - - नि
रै ऽ न अं	धे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ	री ऽ ऽ जि
सां रें मं रें	सां - - -	नि॒ - ध -	प - - सा
या ड ऽ र	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वे ऽ ऽ कै
रे ऩि सा -	ऩि सा रे म॑	प नि॒ ध प	ध म॑ प रें६०
से जा ऊँ ऽ	मि ल न ऽ	ऽ ऽ र सि	या ऽ ऽ न
३	×	२	०

राग : अंबिका सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : परिहू तोरे पैंयाँ सैंयाँ, नाही नाही सहूँ मैं तोरी रंग रलिया |
अंतरा : लाखन के बीच लाज लजाऊँ, कौन बिध समझाऊँ नाही समझत, देख चर्चा करे ब्रिज की लुगैया |

स्थायी

			म
			प
रे रे नि़ सा	रे - म॑ -	प - धनि॒ धनि॒	ध - प प
रि हू तो रे	पैं ऽ याँ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	सैं ऽ याँ ना
३	×	२	०
ध नि॒ सां सां	निसां - नि॒ध प	ध नि॒ ध प	म रे सा म
ही ना ही स	हूँऽ ऽ मैंऽ ऽ	तो री रं ग	र लि या प
३	×	२	०

अंतरा

म॑प ध नि॒ सां	नि सां सां सां	रें मं रें सां	नि॒ ध सां -
ला ऽ ख न	के ऽ बी च	ला ऽ ज ल	जा ऽ ऊँ ऽ
३	×	२	०
रें सां रें सां	सां नि॒ ध प	पध धनि॒ ध प	ध नि॒ ध प
कौ न बि ध	स म झा ऽ	ऊँऽ ऽऽ ना ही	स म झ त
मरे - सा रेम॑	प ध नि॒ रें	सां - - नि॒	- ध प प
दे ऽ ख चऽ	र चा ऽ क	रे ऽ ऽ ब्रि	ऽ ज की लु
३	×	२	०
मरे - सा म	६१		
गै ऽ या प			
३			

४.७.४ राग : चंचलसस मल्हार

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : धैवत स्वर

जाति : षाडव

स्वर : गंधार कोमल तथा दोनों निषाद बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : सा

संवादी : प

गायन समय : वर्षा ऋतू (मध्यरात्रि)

आरोह : सा, नि़रे, सा रे ग, मरे, प, मप, निसां

अवरोह : रेंनि, सांप, निम, परे, ग मरे, सा

पकड़ : रेंनि, सांप, निम, परे, म, सारेग, मरे, सा

विशेषता : यह एक मल्हार का अप्रचलित प्रकार है | जो मल्हार और कान्हड़ा का संयोगीक रूप है | इस राग में शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह में तथा कोमल निषाद का प्रयोग आरोह-अवरोह दोनों में होता है | मल्हार का प्रकार होने से 'रे प' की स्वर संगति इस राग में आती है | आरोह में गंधार का प्रयोग 'सानि़सरेगमरेसा' इस तरह मध्यम तक किया जाता है; यहाँ गंधार थोड़ा आंदोलित रहता है तथा अवरोह में गंधार का वक्र रूप से प्रयोग किया जाता है | इस राग में गंधार ज्यादातर 'पगमरेसा' इस तरह न लेकर, ज्यादातर 'मरेगमरेसा' अथवा 'मसारेगमरेसा' इस प्रकार लिया जाता है | इस राग का स्वरुप वक्र है; जो आरोह में थोड़ा तथा अवरोह में ज्यादा दिखाई देता है | इस राग में मध्यम मुक्त है | अवरोह में थोड़ी सी मेघमल्हार की छाया दिखाई देती है परन्तु '[म]रे [म]रे, [म]रेमरेसा, नि़प़, [म]रे' इस स्वरावली तथा बार-बार रिषभ पर न्यास के कारण मेघमल्हार से दूर हो जाता है | इस राग में 'रेम, रेप, निमप, मरे' इत्यादि स्वर संगति आती

है | सानि़॒रे, सारे, ग॒, मरे, सा, रेप,म, रे, ग॒, मरेसा, रेंनि॒, सांप, नि॒म, परे, म, सारेग॒, मरे, सा’ यह स्वर समुदाय रागवाचक है |[६२] सा रे नि़ सा, सां, म प नि सां -, नि॒ म प, म रे प, मप सां -, रें सां, रेंगं॒, मंरेंसां-, निसांरें निसां, पनि॒ मप, मरेप, म, रे, ग॒,- म रे सा |[६३]

राग : चंचलसस मल्हार - सरगम गीत (एकताल)

स्थायी

(नि़)सा -	सा रे	(सा)नि़॒ रे	सा रे	(सा)नि़॒ सा	(प़)नि़॒ प़
सा रे	(म)ग॒ -	म रे	प -	(प)नि॒ प	(नि)सां -
(नि॒)प नि॒	म प	(म)रे म	(रे)सा रे	(म)ग॒ म	रे सा [६४]
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म म	प (प)सां	- (प)नि॒	म प	सां नि	सां सां
म प	- (सां)नि	सां -	सां (सां)रें	नि॒ सां	सां -
प नि॒	म प	रे म	सा रे	ग॒ म	रे सा [६५]
×	०	२	०	३	४

४.७.५ राग : श्रीरंजनी

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव

स्वर : गंधार तथा निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : सा

संवादी : प

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहार

आरोह : सा रे ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म ग रे सा

पकड़ : म ध नि सां, नि ध म, म ग रे सा

विशेषता : यह एक दक्षिणात्य राग है तथा अब उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत में भी इसका प्रचलन देखने को मिलता है | इस राग के निकटवर्ती रागों में बागेश्री है; बागेश्री में पंचम स्वर लिया जाता है | श्रीरंजनी में पंचम बिलकुल वर्ज्य है | श्रीरंजनी गाते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है की 'म ध सां' स्वरावली न लेकर 'म ध नि सां' स्वरावली लेनी चाहिए जिससे राग अभोगी से बचा जाय |[६६] इस राग की रचना में एकताल मध्यलय में निबद्ध 'गुनी जन करत मेल जब' है- (क्रमिक पुस्तक-मालिका छठी पुस्तक - भातखंडे) |

स्वरुप - सा, रे, गरेसा, ध़नि़सा, ध़नि़सारे ग, रे, म, धमग, रे गरे, सा, नि़ध़नि़सा |[६७]

४.७.६ राग : हंसमन्जरी

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : गंधार

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : दिन का तृतीय प्रहर

आरोह : सा, रे म प ध नि- - ध प, ध- म प, म प ध सां

अवरोह : रें नि, सां ध - प, म प ध प म रे, नि - सा

पकड़ : रेमपध[स]नि - - [सां]धप, ध मप, मप धप मरे नि - सा

विशेषता : इस राग को काफ़ी थाट के अंतर्गत रखा गया है | इस राग में निषाद स्वर पर षड्ज द्वारा आन्दोलन किया जाता है | अवरोह में निषाद वक्र होने के कारण सिंदुरा राग की छटा बार-बार सामने आती है | परन्तु अवरोह में निषाद, गंधार वर्जित 'निसांधप, ध-मप, मपधप, मरे[म]नि-, निसा' इन स्वरावली से सिंदुरा से यह राग बिल्कुल अलग हो जाता है | मंद्र निषाद एक महत्वपूर्ण न्यास स्वर है | इस राग के समीप के रागों में 'गोरख' है | गोरखकल्याण में पंचम दुर्बल है एवं वादी-संवादी 'म सा' है, हंसमंजरी में 'प रे' वादी-संवादी है; इस कारण राग भेद स्पष्ट है |

स्वरुप : सा, रे म प ध नि[सां]- [सां]- ध प, ध- म प, म प ध सां, पधमपसां, रेंसां, रेंमंरेंसां, रेंनिसां, [सां]नि, [सां]नि, [सां]नि, सांधप,, रेमपधनि[सां]-[सां]धप, ध-मप,

मपधनिसां - प, निसां - प, ध - म प, मपधपमरे नि, रेमनि, नि, नि, - निसा | इस राग की रचना में - गगरी भरन नहीं देत-त्रिताल(मध्यलय) है|[६८]

४.८ आसावरी थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.८.१ राग : कौशिकरंजनी

थाट : आसावरी

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : गंधार तथा धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : मध्यम

संवादी : षडज

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म ग रे सा

पकड़ : सा रे ग म, ध नि ध, म, ग म , ग रे सा

विशेषता : राग चंद्रकौंस में रिषभ का प्रयोग करने से इस राग के स्वर सामने आते हैं ।[६९] इस राग की रचना पं. चिदानंद नगरकर जी ने की है | 'सारे गमरेसा' इस स्वर समहू का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कान्हड़ा अंग सामने आता है | पं. मधुसूदन पटवर्धन जी ने इसे औडव-षाडव जाति का राग बताते हुवे पूरा चलन चंद्रकौंस का रखकर अवरोह में रिषभ लिया है | आरोह-अवरोह का स्वरुप इस प्रकार बताया है- 'सा ग म ध नि सां | सां नि ध म ग रे, ग म ग सा | पकड़ - सां नि ध म ग रे, ग म ग सा ऩि सा ध़ |[७०]

स्वर विस्तार : सा ऩि ध़ ऩि सा, ध़ ऩि सा रे सा, सा रे ग म, ध़ ऩि सा, ध़ऩि सारे गम, म ग म, ध नि ध म, नि ध नि सां, सां नि ध, नि ध म, ध म ग म, ग रे सा | ध़ ऩि सा रे ग म, म ग म, ध नि ध म,ध म ग म ग रे सा | सा म, सारे गरे ग म, म ध नि नि ध म, म ध नि सां, सां

नि सां रेंरेंसां निसां नि ध नि सां, सां गं रें सां, सांरें गंरें सां, सांनि ध, म, म ध नि सां, ध नि सां, सां मं, गं रें गं मं, मं गं रें, गं रें सां, रेंरेंसां निसां रेंरेंसां निध, म, ग म ध नि ध म, ग म ग रे सा ।[७१]

राग : कौशिकरंजनी : मध्यलय (त्रिताल)

स्थायी : बरखा ऋतु बैरन हमारी रे, पपीहा पियु-पियु करे जिया डरे,
तड़पत तुमसे मिलन की आस |
अंतरा : तड़प-तड़प रोवत बितत रैना, नाही मानत जियरा भर आये नैना
"चितआनन्द" बिन भई उदास |

स्थायी :

			नि सां
			ब र
रें गं रें सां	नि ध ध ग	म (नि)ध नि -	सां - - -
खा ऽ ऋ तु	बै र न ह	मा ऽ री ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
नि सां रें गं	रें सां नि ध	म म - म	रे ग रे सा
प पी हा ऽ	पि यु पि यु	क रे ऽ जि	या ऽ ड रे
०	३	×	२
,सा म म म	ग म ध नि	सां नि रें सां	रें सां नि सां
,त ड़ प त	तु म से मि	ल न की ऽ	आ स ब र

अंतरा

सां नि ध म	ग रे सा -	सां सां सां -	सां रेंगं रें सां
त ड़ प त	ड़ प रो ऽ	व त बि ऽ	त तऽ रै ना
०	३	×	२
नि सां रें गं	रें सां नि सां	(नि)ध - ध नि	ध नि ध म
ना ही मा ऽ	न त जि य	रा ऽ भ र	आ ये नै ना
०	३	×	२
,सा सा ग -	म - (नि)ध -	नि (रें)सां सां सां	नि सां नि सां [७२]
चि त आ ऽ	न न्द बि ऽ	न भ ई उ	दा स ब र

४.८.२ राग : गोपीबसन्त

थाट : आसावरी

वर्ज्य स्वर : ऋषभ

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : गंधार, धैवत तथा निषाद स्वर कोमल

वादी : षड्ज़

संवादी : पंचम

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : नि̱सा, ग̱मप, नि̱ध̱-नि̱ सां

अवरोह : सां, ध̱नि̱ध̱-मे, प-ग̱-मग̱-सा

पकड़ : म प नि̱ध̱-नि̱ सां, ध̱नि̱ध̱-मे, प-ग̱-मग̱-सा

विशेषता : यह एक कर्नाटक पद्धति का स्वरुप हैं। इस राग को 'गोपिकाबसंत' के नाम से भी जाना जाता है । 'ध̱नि̱साग̱मग̱-सा' तथा 'सां-ध̱नि̱ध̱-म' इन स्वरावली से राग मालकौंस की छाया उत्पन्न होती है । परन्तु 'मपध̱नि̱ सां' एवं 'प-ग̱-मग̱-सा' इस तरह पंचम के प्रयोग से मालकौंस दूर होता है । इसी प्रकार आरोह में पंचम के सरल प्रयोग से अड़ाणा राग की छाया दिखाई देती है । परन्तु अड़ाणा की 'ध̱ नि̱ प' स्वर संगती गोपीबसंत में नहीं है । अवरोह में 'सांध̱नि̱ध̱-म प ग̱-म ग̱ सा' इस प्रकार वक्र स्वरों का प्रयोग होता है। मतलब की अवरोह में निषाद तथा पंचम का वक्र प्रयोग होता है ।[७३] अंतरे का उठान 'ग̱मध̱नि̱सां' इस प्रकार होता है । इस राग में बीच-बीच में मध्यम पर न्यास होता रहता है। इस राग में आसावरी तथा मालकौंस की छाया दिखाई देती है। बीच-बीच में धनाश्री तथा भैरवी की भी थोड़ी सी छाया दिखाई देती है ।[७४] स्व.पं.विनायकराव पटवर्धन जी ने राग विज्ञान (छटवां भाग) के अन्तर्गत पृ.१३४ पर 'पंचम मालकौंस' नाम का एक राग दिखाया है जो इससे मिलता-

जुलता प्रतीत होता है । गोपी बसंत यह आसावरी अंग का राग है तथा चलन इसका वक्र है ।‘म प ध॒ नि॒ सां म’ यह संगति राग की रंजकता बढ़ाती है |[७५] इस राग के समीप के रागों में कोकिलपंचम, पंचममालकौंस तथा सुंदरकौन्स इत्यादि राग है | कोकिलपंचम (सा ग॒ म प ध॒ सां - सां ध॒ म प ध॒, म प ग॒, म ग॒ सां) में रिषभ तथा निषाद नही लिया जाता | पंचममालकौंस (सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां - सां नि॒ ध॒ म प म ग॒ सा) के आरोह में पंचम नहीं लिया जाता तथा रिषभ स्वर वर्ज्य है | | सुंदरकौन्स (सा ग॒ म ध नि॒ सां - सां नि॒ ध म ग॒ सा, इसे बागेश्री अंग का चन्द्रकौन्स भी कहते हैं |) में ‘रेप’ स्वर वर्ज्य है |[७६]

स्वर विस्तारः सा ध़॒ नि़॒-, नि़॒ ध़॒ नि़॒ सा। ध़॒ नि़॒ - - ध़॒ग॒-नि़॒साग॒ध़॒-, ध़॒ प़ -, ध़॒ - म़ - , म़ नि़॒ -- ध़॒ - नि़॒ - सा। नि़॒ सा ग॒ - - ग॒ग॒सासानि़॒नि़॒ध़॒--, नि़॒सा ग॒-सा | सा–साग॒ नि़॒ - नि़॒सा ध़॒ ध़॒ म़ प़--, ध़॒ म़ प़--, ग़॒ प़- ग़॒ म़- , प़-, प़ ध़॒, ध़॒ ध़॒ नि़॒ ध़॒ ध़॒ प़, प़ ध़॒ म़ प़-, ग़॒ म़ ग़॒ सा | ग़॒ म़ ध़॒ ध़॒ - ध़॒ प़ म़- ग़॒-म़ | प़म़ग़॒म़ ध़॒ -, प़म़ग़॒म़ प़-, प़म़ग़॒-, प़म़-, म़ म़ ध़॒- नि़॒ - सासा नि़॒ ध़॒ नि़॒सा- नि़॒ ध़॒ प़ | ग़॒ म़ ध़॒ - नि़॒ - ध़॒, नि़॒ सा | नि़॒ सा-, नि़॒सा नि़॒ सा नि़॒साग॒ग॒सा नि़॒साग॒ ध़॒ | ध़॒ नि़॒ - , ध़॒ नि़॒ सा- नि़॒, ध़॒ नि़॒ सा ग॒- नि़॒ ग॒- सा | ध़॒ ग॒, ध़॒ सा, ध़॒ नि़॒ नि़॒ ध़॒ - प़ | प़ - म़ ध़॒ नि़॒ ग॒- सा | सासा नि़॒ - ग॒ग॒सानि़॒धनि़॒साग॒- नि़॒ ग॒- सा | म़- म़प़, प़- प़ध़॒, ध़॒ - ध़॒नि़॒ नि़॒ सा-, नि़॒ ग॒- सा | ध़॒नि़॒ - ध़॒नि़॒ सानि़॒, ध़॒नि़॒साग॒ - - नि़॒ग॒ - सा । म - ग॒म- ग॒ सा | ध़॒ नि़॒ सा ग॒--, मग॒सानि़॒ध़॒नि़॒सा म ग॒सानि़॒ध़॒नि़॒सा ग॒ सा | ध़॒ नि़॒ सा म, ध़॒ नि़॒ सा ग॒, साग॒मग॒सानि़॒ध़॒नि़॒सा म- | म - ग॒सा-, ग॒- संनि़॒ - , सा - नि़॒ध़॒, नि़॒ साग॒ मग॒सानि़॒ध़॒नि़सा म | ग॒- मग॒सानि़॒ध़॒नि़॒साग॒- म | ध़॒नि़॒ साग॒ -, ध़॒नि़॒ साम-, ध़॒नि़॒ साग॒-, नि़॒ ग॒ सा म | साध़॒नि़॒ध़॒प, प़ म़ ध़॒ नि़॒ ग॒ सा। मग॒सानि़॒ध़॒नि़॒साग॒ - म - - , मग॒सानि़॒ध़॒नि़॒साग॒, ध़॒नि़॒साग॒ - , ध़॒नि़॒साम-, ध़॒नि़॒साग॒, नि़॒ग॒साम-,| म - - प - ग॒ - प - म - , सा ग॒ म प

म , पगमगपम-, पगमसा- गऩि - गसा मग, सा म - , साम, मप, ध,
निधप म, पधनिधप, धमप, ध़ऩिसागमप, गमपधनिध, म, प, धम, पग,
मग, सा। गमध- प- धम- पग- पम-, म़ध़ऩिसागमध–प - म, गमप- -,
गमध- प-, सागमध- प-, मप, धम, पग-, मग, सा, मपधनिसां ध-निध-प,
मपधनिसां, ध-निध-प, पधनिधप, गमपधप-, धम, पग, मग, सा, ध़ ऩि
सा। गगसाऩिध़ऩिसागमप, मप, धनिसां, धनिध-प, धम, पग, मग, सा।
ग,म,धनिसां, ऩिसागमधनिसां, सागमप धनिसां, ध,नि,सांगंसां, सांगंमंगंसां,
गंनिसां, ममपपधधनिनिसां, धनिधप, सां, धनिध- म प, गमधनिसां, मंगंसां,
निधनिसां, ध, निध-, धम प ग म ग सा।[७७]

राग : गोपी बसन्त - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : जय जय जय जगत जननी, ज्वाला मुखी कालिका।

अंतरा : शुभ गुण मंगलदानी, सुख: दाईनी वरदानी, आशीष देहो तनरंग, गले सोहे रुँड मालिका।

स्थायी

सां सां	ध नि	ध प	ध म	प ग	म म
ज य	ज य	ज य	ज ग	त ज	न नी
×	०	२	०	३	४
सा ग	म प	ग म	- सांनि	धप मग	सा -
ज्वा ऽ	ला ऽ	मु खी	ऽ काऽ	ऽऽ लिऽ	का ऽ
×	०	२	०	३	४

अंतरा

ग ग	म म	ध -	नि नि	नि सां	- सां
शु भ	गु ण	मं ऽ	ग ल	ऽ दा	ऽ नी
×	०	२	०	३	४
सां गं	सांगं मं	गं सां	नि गंसां	ध नि	सां -
सु ख	दाऽ ऽ	ई नी	व रऽ	दा ऽ	नी ऽ
×	०	२	०	३	४

सां सां	ध नि	ध प	म प	ग म	- म
आ ऽ	शी ष	दे ऽ	हो त	न रं	ऽ ग
×	०	२	०	३	४
सा ग	म प	पध निध	म सांनि	धप मग	सा - [७८]
ग ले	सो हे	रुँऽ ऽऽ	ड माऽ	ऽऽ लिऽ	का ऽ
×	०	२	०	३	४

४.९ भैरवी थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.९.१ राग : शुक्लमंजिरी

थाट : भैरवी

वर्ज्य स्वर : आरोह में मध्यम तथा अवरोह में पंचम स्वर

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ, गंधार, धैवत तथा निषाद स्वर कोमल

वादी : ध॒

संवादी : ग॒

गायन समय : दिन का प्रथम प्रहर

आरोह : सा रे॒ ग॒ प ध॒ नि॒ सां

अवरोह : सां नि॒ ध॒ म ग॒ रे॒ सा

पकड़ : सा रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ सा, नि॒ ध॒, ध॒ म ग॒, रे॒ ग॒ प, म ग॒ रे॒ सा ।

विशेषता **:** यह एक आधुनिक राग कल्पना है | इस राग के समीप के रागों में बिलासखानी तोड़ी है | परन्तु बिलासखानी के आरोह में कोमल निषाद वर्ज्य है । इस से राग भेद स्पष्ट है |

स्वर विस्तार **:** सा ऩि॒ ध़॒, ध़॒ ऩि॒ सा, ध़॒ ऩि॒ सा रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ म ग॒ रे॒ सा, सा रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ प, ग॒ प॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒, रे॒ ग॒ प, ध॒ म ग॒, रे॒ ग॒, म ग॒ रे॒ सा । ध़॒ ऩि॒ सा रे॒ ग॒, म ग॒ रे॒ सा, नि॒ ध॒ म ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ प, ध॒ म ग॒ प, ध॒ नि॒ ध॒ म, ग॒ रे॒ सा रे॒ ग॒ प, ध॒ म ग॒, ध॒ म ग॒ रे॒ सा | ग॒ प ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सां, सां रें॒ गं॒ रें॒ सां, रें॒रें॒ सां नि॒सां नि॒ध॒, ध॒ नि॒ सां॒ रें॒ गं॒,

मं गं रें गं, रें सां, रें नि ध, म ग, रे ग प ध नि ध म ग, ध म ग,रे ग रे सा ।[७९]

राग : शुक्लमंजिरी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : काहे करत गुमान प्यारे, मनवा इतनो जोबन पर |
अंतरा : दिन-दिन घटत तन जोबन, अब तो कर मन प्रभु को ध्यान||

स्थायी

सारे गप ध म	ग रे सा -	ध - ध म	ग रे सा -
काऽ ऽऽ हे क	र त गु ऽ	मा ऽ न ऽ	प्या ऽ रे ऽ
प ध नि सां	रें सांनि ध -	ध म ग रे	ग रे सा -
म ऽ न ऽ	वा इत नो ऽ	जो ऽ ब न	प ऽ र ऽ
०	३	×	२

अंतरा

प ध म ग	प ध नि सां	सांरें गं रें गं	मं गं रें सां
दि न दि न	घ ट त ऽ	तऽ न ऽ जो	ब न वा -
प ध नि सां	रें गं रें नि	सां नि ध म	ग रे सा - [८०]
अ ब तो ऽ	क र म न	प्र भु को ऽ	ध्या ऽ न ऽ
०	३	×	२

४.९.२ राग : मालव

थाट : भैरवी (मेल हनुमत्तोड़ी)

वर्ज्य स्वर : रिषभ

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : दोनो गंधार, दोनों धैवत, कोमल निषाद, शुद्ध मध्यम तथा पंचम।

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्रिका तीसरा प्रहर

आरोह : सा ग म प धु नि सां

अवरोह : सां नि धु, प धधपध नि ध प गु म गुगु - सा

पकड़ : सां नि धु, प धधपध नि ध प गु म गुगु - सा

विशेषता : इस राग के आरोह में शुद्ध गंधार तथा कोमल धैवत प्रयुक्त होते हैं । अवरोह में वक्र रूप से शुद्ध धैवत तथा कोमल गंधार लगते हैं | इस लिये इस राग की जाति वक्र षाडव है |“[1] पूर्वांग में ‘धु नि सा ग म’ इस प्रकार शुद्ध गंधार का प्रयोग आरोहात्मक किया जाता है । अवरोह करते समय ‘सां नि धु’ के बाद धैवत पर थोड़ा रूक कर ‘प ध ध नि धपम ग-म’ यह शुद्ध धैवत तथा कोमल निषाद युक्त स्वर समुदाय लेकर तत्पश्चात ‘गु सा’ यह स्वर लेकर आलाप की समाप्ति करते हैं। इस राग में मालकौंस का ही चलन है तथा मालकौंस का ही एक श्रुति-रंजक प्रकार है | फर्क इतना है की अवरोह करते समय पंचम के साथ शुद्ध धैवत, कोमल निषाद तथा शुद्ध गंधार युक्त ‘प ध ध नि ध प म ग- म’ यह स्वर समूह जोड़ा जाता है| शुद्ध गंधार एवं शुद्ध धैवत लगाते वक्त ‘मालगूंजी’ का भास होता है |

राग का **चलन** - सा नि़ ध़ सा, ध़नि़ सा ग ग म, म ध म, ध नि ध म, प ध ध नि धपम ग- म,^सा^ग सा, म ध नि सां, सां नि ध, प ध ध नि ध प म ग- म, गग सा, नि़ ध़ सा |[८२]

स्वर विस्तार : नि़ सा नि़ -, सा ग सा नि़ सा नि़ -, साग म - गग - सा नि़सा नि़ - सा ग म | सा गम प मप ग म गग - सा, ग म गग-सा । ग सा नि़ सा नि़ ध़ प़, प़ ध़ध़प़ध़ नि़ ध़ प़ ध़ नि़ सा। सागमप - म, ध ध प म प ग म गग - सा, गम प ग म गग - सा, ग सा नि़ सा ध़ प़ ध़ नि़ सा | सागमप - म, ^नि^ध^नि^ध पम-, धधपध नि ध प ध प मपम प ग - म गग - सा, सगमप मपमप ग - म गग - सा, ग म गग - सा, ग सा नि़ सा ध़ प़, प़ध़ध़प़ध़ नि़ ध़ प़ प़, ध़ नि़ सा। धनि सां नि सां ^नि^ध -, प- धधपध नि धप धप मप ग म ग ग सा - नि़ सा | धनि सां गं सां नि सां, ^नि^ध - प- धधपध निध पध पम प गम गग- सा- नि़ सा |[८३]

राग : मालव – ख्याल ताल-तिलवाड़ा

स्थायी: राधे-राधे अमृत फल की ओरे।

अंतरा: राधा गोविंद मुरली मुकुंद सकल सफल की होरे।

स्थायी

											सा<u>ग</u>
											राधे
म	-	मप--	-	-	मगम-	म	-	मम	मम	प<u>ग</u>	म
रा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	धे	ऽ	अमृ	तफ	लऽ	की
×				२				०			
<u>ग</u><u>ग</u>--	सा	<u>नि</u>	सा<u>ग</u>	म	-	मप--	-	-	मगम-	म	-
ओऽऽऽ	रे	ऽ	राधे	रा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	धे	ऽ
३				×				२			

अंतरा

<u>नि</u><u>ध</u>	<u>नि</u><u>ध</u>	<u>नि</u>सां	-	-	<u>नि</u>सां	सां	<u>नि</u>सां	<u>नि</u>सां	<u>नि</u><u>ध</u>	-	प	-
रा	धा	गोविं	ऽ	ऽ	ऽ	द	मुर	लीमु	कुं	ऽ	द	ऽ
०					३				×			
पप	प	ध-पध	<u>नि</u>	धप	म	-	म	<u>ग</u><u>ग</u>--	सा	<u>नि</u>	सा<u>ग</u> ८४
सक	ल	ऽऽऽऽ	ऽ	सफ	ल	ऽ	की	होऽऽऽ	रे	ऽ	राधे
२				०				३			

राग : मालव - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हे मेरो मन मोहना, आयो नही सखी री।
अंतरा : कै कहूँ काज किया संतन का, कै कहूँ गैल भुलावना।।

स्थायी

ग सा ^{म}ग म	ग सा $^{नि}$ध नि	सा ग - ग	^{म}ग म - -
हे ऽ मे ऽ	रो ऽ म न	मो ऽ ऽ ह	ना ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
म $^{नि}$ध - नि	सां - - गंसां	$^{नि}$ध प ध धनि	ध प म ^{ग}म
आ यो ऽ न	ही ऽ ऽ सऽ	खी ऽ ऽ ऽऽ	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

^{म}ग - ग ग	म - ध नि	सां - सां -	नि गं सां -
कै ऽ क हूँ	का ऽ ज कि	या ऽ सं ऽ	त न का ऽ
०	३	×	२
सांगं मं $^{सां}$गं सां	$^{नि}$ध - म प	प ध ^{प}ध नि	ध प म गम
कैऽ ऽ क हूँ	गै ऽ ल भु	ला ऽ ऽ ऽ	व ना ऽ ऽऽ
०	३	×	२

४.१० तोड़ी थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.१०.१ राग : परमेश्वरी

थाट : १० मेलकर्ता नाटकप्रिया (तोड़ी अंग)

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ, गंधार तथा निषाद स्वर कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : दिन का द्वितीय प्रहर

आरोह : सा रे ग, म, ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म, गम ग, रे ग रे सा

पकड़ : म ग म ध नि ध म, ग रे ग, रे सा

विशेषता **:** यह दक्षिण पद्धति का राग है | परन्तु आज-कल हमारे उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत में भी लोकप्रिय हुआ है | इसे तोड़ी अंग का राग भी मानते हैं | इस राग में षडज, गंधार तथा मध्यम स्वर पर न्यास होता है | इस राग के पूर्वांग में 'सा रे ग, रे ग रे सा' राग तोड़ी की स्वरावली है तथा उत्तरांग में 'म ध नि ध म, म ध नि सां' इत्यादि राग बागेश्री के स्वर-समूह है | इस राग की संकल्पना को लेकर एक दो मतान्तर देखने को मिलते है - १) अहिरी तोड़ी में पंचम वर्ज्य करने से इस राग का प्रादुर्भाव होता है | 'ध़ नि़ रे सा' इस स्वर समूह के प्रयोग से अहीर भैरव का भास् होता है | स्वरुप- सा रे ग, रे सा, नि़ ध़, ध़ नि़ रे सा, सा नि़ ध़ नि़ सा रे ग, म, म ग रे ग म, ध नि ध नि सां, ध नि रें सां, रें गं, रें सां, रें गं, मं, मं गं रें गं, रें सां, सां नि ध म ग रे ग, ग रे सा ध़ नि़ सा |[८६] २) पूर्वांग में भैरवी तथा उत्तरांग में काफ़ी थाटों के स्वरों के मिश्रण द्वारा

इस राग की संकल्पना की गई है | इस राग के प्रचार-प्रसार में पं. रविशंकर जी का बड़ा योगदान है | इस राग का स्वरुप दक्षिण पद्धति के १० वें नाटकप्रिय मेल जन्य 'अलंकारप्रिया' राग से बहुतकुछ मिलता-जुलता है |[८७] पं. मधुसूदन विनायक पटवर्धन जी के मतानुसार राग बागेश्री में पंचम वर्ज्य करके तथा रिषभ कोमल करने से इस राग का आविर्भाव होता है | उन्होंने इस वजह से इस राग को 'बागेश्वरीतोड़ी' नाम से भी संबोधित किया है तथा जाति औडव-षाडव बताई है |[८८]

राग : परमेश्वरी - (रूपकताल)

स्थायी : मातेश्वरी परमेश्वरी, सुनलो अरज अब मोरी माँ |
अंतरा : हम तो मुरख अनजान माँ, पैंया परुँ अब तोरे माँ ||

स्थायी

					,ग म
					,मा ऽ
ध - ,नि	ध म	-म म	गरे गमरेग -	रे सा	-म म
ते ऽ श्व	री ऽ	ऽप र	मेऽ ऽऽऽऽ ऽ	श्व री	,सु न
गरे रे रे	नि़ नि़	ग रे	सा - -	[रेनि]सा -	,ग म
लोऽ ऽ अ	र ज	अ ब	मो ऽ ऽ	री ऽ	मा ऽ
×	२	३	×	२	३

अंतरा

					,नि ध
					,ह म
मग - ,म	ध ध	नि ध	धनि सां -रें	सां -	,सां -
तोऽ ऽ ,मु	र ख	अ न	जाऽ ऽ ऽन	माँ ऽ	,पैं ऽ
सांरें गंरें रें	सां नि	ध म	गरे रेगम रेग	[ग]रे सा	,ग म [८९]
याऽ ऽऽ प	रुँ ऽ	अ ब	तोऽ ऽऽऽ ऽऽ	रे ऽ	,मा ऽ
×	२	३	×	२	३

४.११ मिश्र थाट के षाडव-षाडव जाति के राग |

४.११.१ राग : मधुकल्याण

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : धैवत

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : निषाद स्वर कोमल तथा माध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह : नि॒ सा, रेगम॑ प, ग म॑ प नि॒ सां

अवरोह : सां नि॒ प, रे ग म॑ प, म॑ ग रे नि॒ सा

पकड़ : ग म॑ प नि॒ सां, नि॒ प, प म॑ग रे, नि॒ सा

विशेषता : प्रस्तुत राग की संकल्पना पं. वि. रा. आठवले जी की है, उनका यह स्वकृत राग है | यह एक आधुनीक राग है । यह राग मधुकौंस तथा कल्याण राग के मिश्रण से बना है।

स्वर विस्तार: नि॒ सा, नि॒ रे सा, नि॒ सा नि॒ प, प नि॒ सा, नि॒ सा ग, ग रे सा, नि॒ रे सा, रे ग म॑ प, प, रे- नि॒ सा, रेगम॑ प, प म॑ ग, गम॑पनि॒ म॑प म॑नी॒, गम॑ पनी॒ सां नि॒ प, रे ग म॑ प, म॑ ग, प रे, ग रे, नि॒ सा।[१०]

पं. मधुसुदन विनायक पटवर्धन द्वारा रचित ‘राग विज्ञान अष्टम भाग’ के अन्तर्गत जो मधुकल्याण वर्णित है | वह प्रस्तुत राग मधुकल्याण से भिन्न है | उसमे गंधार कोमल; मध्यम तीव्र; निषाद शुद्ध तथा आरोह में रिषभ

वर्ज्य है | जाति षाडव-संपूर्ण मानकर आरोह-अवरोह स्वरुप - 'ऩिसाग॒ म॑प म॑धनिसां-सांनिध, म॑धनिधप, म॑ग॒रेसा' माना है |[९१]

राग : मधुकल्याण - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मोसे छेड़ करोना नाद पिया, ठिठोरी करोना देखत सब सखी।
अंतरा : लाज आवत चर्चा करत सब, सास ननंद मोरी देगी गारी ॥

स्थायी

			ग म॑
			मो से
०			
पसां नि॒सां नि॒ प	म॑ग रे ग म॑	प - प प	प - - म॑ग
छेऽ ऽऽ ड़ क	रोऽ ना ना ऽ	द ऽ ऽ पि	या ऽ ऽ ठिऽ
०	३	×	२
रे रे - नि॒	सा सा - सा	ग रे म॑ ग	प प ग म॑
ठो री ऽ क	रो ना ऽ दे	ख त स ब	स खी मो से
०	३	×	२

अंतरा

, प म॑ प	ग म॑ प नि॒	सां - - नि॒	सां गं रें सां
, ला ज आ	व त च र	र्चा ऽ ऽ क	र त स ब
०	३	×	२
रें - रें सां	नि॒ सां नि॒ प	प म॑ प म॑	ग - ग म॑ [९२]
सा ऽ स न	नं द मो री	दे ऽ गी गा	री ऽ मो से
०	३	×	२

४.११.२ राग : अहीर ललित

थाट : मिश्र मेलोत्पन्न (भैरव, काफी और मारवा)

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : ऋषभ तथा निषाद कोमल एवं दोनों मध्यम बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा रे ग, म, मंम, ध, नि सां अथवा सा रे नि, सा रे ग, ममंमग, मधनिसां

अवरोह : सां नि ध, मंम, ग, मंगरेसा अथवा सां नि ध मं म ग, ग रे, नि रे सा

पकड़ : म ध नि ध मं म ग, ग रे ग मं ग रे सा, रेनि, सा रे ग म अथवा मधनिरेंसां, निध, मंम, ग, मंगरेसा, रेग,म

विशेषता : यह राग अहीर भैरव तथा ललित (शुद्ध धैवत) के संयोग से बना है । यह भैरव का अल्प-प्रचलित मधुर-रंजक एक प्रकार है । इस राग में गंधार पर भी बार-बार न्यास करते हैं । इसका आरोह करते समय ज्यादातर 'सा रे ग, म ध नि सां' इस तरह से शुद्ध मध्यम तथा धैवत की संगती से किया जाता है । परन्तु कभी-कभी तीव्र मध्यम को लेकर भी आरोह करते है । वैसे ही अवरोह में 'सां नि ध मं म' इस प्रकार धैवत के बाद तीव्र मध्यम तथा बाद में शुद्ध मध्यम लिया जाता है । ज्यादातर 'मं

ग रे॒ सा’ लेते समय तीव्र मध्यम वाला ‘म॑ ग रे॒ सा’ का प्रयोग किया जाता है । परन्तु कभी-कभी शुद्ध मध्यम युक्त ‘म ग रे॒ सा’ बीच-बीच में ले लेते है । ‘म ध नि॒ सां, नि॒ ध नि॒ रें॒ सां, नि॒ ध नि॒ सां सां रें॒ नि॒ सां नि॒ ध’ इत्यादि स्वर समूह से अहीर भैरव तथा ‘सा रे॒ ग म, रे॒ ग म, म॑ म ग, रे॒ ग म॑ ग रे॒ सा’ तथा ‘म ध म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा’ इत्यादि स्वर समुदाय में ललित दिखाई देता हैं।[९३] राग ललित में ‘ऩि रे॒ ग म ’ तथा ‘म॑ ध निसां’ जाते हैं; जब की इस राग में ‘सा रे॒ ग म’ तथा ‘म ध नि॒ सां’ इस प्रकार जाया जाता है । ‘सा रे॒ सा ऩि॒, सा रे॒ ग’ इस प्रकार गंधार पर ठहरना उचित है |

स्वर विस्तार : सा रे॒ ऩि॒ - सा, सारे॒ग, सारे॒गम, म॑मग-, म॑गरे॒सा । सा रे॒ ऩि॒, साऩि॒धऩि॒सारे॒गम, गम म॑म ग, म ध, नि॒ ध म॑ म ग, रे॒ग म॑ग, रे॒ सा । गमधनि॒सां, नि॒धमधनि॒सां, नि॒रें॒सां, नि॒ सां रें॒ गं, म॑ गं रें॒ सां - सां रें॒रें॒सांनि॒सां रें॒नि॒सां सांनि॒ रें॒नि॒ धम॑ मग, सागम ग-म॑म ग, रे॒ग म॑ग रे॒ सा । गमधनि॒सां, सां रें॒ सां नि॒ ध, मधनि॒सां नि॒ ध म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा |[९४]

राग : अहीर ललित - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: जारे-जारे-जारे कगवा, अब ना सतावो मोहे, आस लगी पिया दरस की।

अंतरा: अगम संदेसा जब पाई, मगन हूँ मैं बातन में, उन लिख भेजी प्रेम रसकी।

स्थायी

म	ध नि॒ नि॒ सां	सां [नि]- ध नि॒	ध म॑ म म॑
जा	रे जा ऽ रे	जा ऽ ऽ ऽ	रे ऽ क ग
म॑ ग - म॑	ग रे॒ - नि॒	रे॒ - - -	सा - ग -
वा ऽ ऽ अ	ब ना ऽ स	ता ऽ ऽ ऽ	वो ऽ मो ऽ
म - - म	- ध - नि॒	सां - - सां	[नि]ध नि॒ ध म॑
हे ऽ ऽ आ	ऽ स ऽ ल	गी ऽ ऽ पि	या ऽ द र
०	३	×	२
[ग]म म॑ [म]ग म			
स ऽ की जा			
०			

अंतरा

म	ध नि॒ - [रें]सां	सां - - -	नि॒ सां नि॒ ध
अ	ग म ऽ सं	दे ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ज ब
नि॒ सां सां ध	नि॒ सां - [गं]रें॒	गं - - -	रें॒ - सां सां
पा ऽ ई म	ग न ऽ हूँ	मैं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ बा ऽ
ध नि॒ ध म	ध नि॒ रें॒ -	सां - सां सां	ध नि॒ ध म॑
त न में उ	न लि ख ऽ	भे ऽ जी प्रे	ऽ म र स
०	३	×	२
म म॑ ग म	९५		
की ऽ ऽ जा			

राग : अहीर ललित - झपताल

स्थायी : मानिनी मानि जिनी। मान ये तो करे। आपु पाइ न परे। नाथ तेरे।

अन्तरा : दर्श जाको करण। जगत् तरसे सदा। सो तो इकटक तेरो वदन हेरे।

स्थायी

रेग म॑	ग रे सा	नि़ सा	नि़ ध़ नि़
माऽ ऽ	नि नी ऽ	मा ऽ	नि जि नी
×	२	०	३
सा -	रे ग म	म -	म॑ ग रे
मा ऽ	न ये ऽ	तो ऽ	क रे ऽ
×	२	०	३
ग -	म ध -	ध नि	ध म ग
आ ऽ	पु पा ऽ	इ न	प रे ऽ
×	२	०	३
गम म॑	म ग -	रे म॑	ग रे सा
नाऽ ऽ	थ ते ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

अंतरा

ग -	म ध नि	नि सां	रें सां सां
द ऽ	र्श जा ऽ	को ऽ	क र ण
×	२	०	३
नि सां	रें गं रें	गं मं॑	गं रें सां
ज ग	त् त र	से ऽ	स दा ऽ
×	२	०	३
नि रें	- सां नि	(रें)सां नि	ध म म
सो तो	ऽ इ क	ट क	ते ऽ रो
×	२	०	३
ग म	म॑ म ग	(म॑)रे ग	(म॑)ग रे सा[१६]
व द	न हे ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

४.११.३ राग : मालती बसंत

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : पंचम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ कोमल तथा दोनों मध्यम बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : ध

संवादी : ग

गायन समय : रात्री का अंतिम प्रहर

आरोह : सा नि़ रे॒ सा, सा ग, म॑ ध सां

अवरोह : सां नि रें॒ नि ध, म॑ ग, सा म म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा

पकड़ : सा म म॑ म ग, म॑ ध नि म॑ ध, म॑ ग रे॒ सा, नि़ रे॒ सा

विशेषता : इस राग में दो से चार रागों की छाया आती है। 'म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा' से बसन्त, 'म॑ ग रे॒ सा, रे॒ सा नि़' तथा 'नि म॑ ग म॑ नि म॑' से पुरिया, 'सा म म॑ म ग' से ललित तथा 'सां ध ध नि म॑ ध' इत्यादि से हिंडोल, एवं 'म॑ ध नि सां रें॒ सां, तथा 'सां नि रें॒ नि ध,' से सोहनी राग की छाया आती है । इस राग में गंधार पर न्यास होता है । पूर्वांग में पुरिया एवं उत्तरांग में हिंडोल राग का मिश्रित स्वरुप रखते हुए चलन सोहनी का रहता है |

स्वर विस्तार : सा - रे॒सासा नि़ ध़, सा नि़ रे॒ सा, नि़ रे॒ ग, म॑ ग रे॒ सा | ध़ नि़, नि़ रे॒ ग, म॑ ग रे॒ सा। सा - सारे॒सासा नि़ -, ध़ नि़, नि़ ध़, ध़सा - नि़ - रे॒सा, नि़ - रे॒ग म॑ ग, म॑ ध, ध म॑ ग, म॑-ग-रे॒सा। साम- म [ग]म म॑म- ग, म॑ ध, ध म॑ म ग, रे॒ग - म॑-ग-रे॒-सा। सा ध [नि]ध [नि]म॑ ध, [ध]म [नि]ध सां,

नि-रें सां, सां रेंसां निध, निध मंग, मं ग रे सा | सा म मंम ग, सा ध निध निमं निध सां नि रें सां, नि-रेंगं, मंनि रेंसां, सां निरेंनिध, धनि धध सां ध मं ग, मनिधमंग, मं ग रे सा | ऩि मं ग रे सा, म मंम मंम ग, नि ध मं ग, सां ध ध सां, गं सां, सां रेंसां नि ध, निमं ध, सा म मंम ग, मं ग रे सा|[९७]

राग : मालती बसन्त - आडा चौताल (ख्याल)

स्थायी : ताल सुर भेद गावत गुनीयन सब तान ताल के प्रमान न्यारे-न्यारे कर दिखात |
अंतरा : वादी-समवादी संकीरन संपूरन कहे गुरु तानसेन उपज निपज न्यारे-न्यारे कर दिखात |

स्थायी ,म ,ता

-ग रेसा	रेसाऩि- -	धृ सा	- म	म मम	मम -	मंम ग
ऽल सुर	भेऽऽऽ ऽ	द गा	ऽ व	त गुनी	यन ऽ	सऽ ब
०	×	२	०	३	०	४
ग -ग	मंध -ध	धमं धनिसां	-सां निरें	निध मंग	मंग मंग	
ता ऽन	ताऽ ऽल	के प्रमा	ऽन न्याऽ	रेन्या ऽरे	कर दिखा	
०	×	२	०	३	०	
रेसा -मं	-ग रेसा					
ऽत ऽता	ऽल सुर					
४	०					

अंतरा

साध -	ध धध	निम॑ -	ध ध	धम॑ धसां	सांसां सांनि	रें॒नि ध
वाऽ ऽ	दी सम	वा ऽ	ऽ दी	सं कीऽ	रन संपू	ऽर न
×	२	०	३	०	४	०
म॑ग म॑ग	- म॑ग	म॑ ग	रे॒ निसा	- सा	- ऩिऩि	धऩि सासा
कहे गुरु	ऽ ता	ऽ न	से ऽ	ऽ न	ऽ उप	जनि पज
×	२	०	३	०	४	०
सा ध	ध म॑	ग ग	म॑ग म॑ग	- रे॒	सा -म॑	-ग रे॒सा[९८]
न्या ऽ	रे न्या	ऽ रे	कर दिखा	ऽ ऽ	त ऽता	ऽल सुर
×	२	०	३	०	४	०

राग : मालती बसन्त - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: प्रितमवा घर आये, प्रितमवा घर गरवा लगाये, एरी सखी मैं नीत अति सुख पाये।

अंतरा: जाने न दुँगी सौतन के सन, वाके बिना मोहे कछु न सुहावे।

स्थायी

			ग -
			प्रि ऽ
म॑ नि ध -	- ग - ग	म - - म॑	म ग ग -
त म वा ऽ	ऽ घ ऽ र	आ ऽ ऽ ये	ऽ ऽ प्रि ऽ
म॑ नि ध -	- ग - ग	ग रे म॑ रे	ग रे सा -
त म वा ऽ	ऽ घ ऽ र	ग र वा ल	गा ऽ ये ऽ
ध़ ऩि रे ग	ग म॑ म ग	म॑ ध निरें नि	ध म॑ ग -
ए री स खी	मैं ऽ नी त	अ ति सुऽ ख	पा ये प्रि ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म॑ ध सां सां	नि रें सां सां	नि रें नि म॑	ध म॑ म -
जा ऽ ने न	दुँ ऽ गी ऽ	सौ ऽ त न	के ऽ सं ग
०	३	×	२
रेऩि - रे ग	ग म॑ म ग	म॑ ध निरें नि	ध म॑ ग -९९
वा ऽ के बि	ना ऽ मो हे	क छु नऽ सु	हा वे प्रि ऽ
०	३	×	२

४.११.४ राग : सालगवराली

थाट : मिश्र (मेल ४६ षड्विधमार्गिणी मेल, खाटमारग)

वर्ज्य स्वर : मध्यम

जाति : षाडव-षाडव

स्वर : रिषभ, गंधार तथा निषाद कोमल

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे ग प, प ध नि ध सां

अवरोह : सां नि ध प, ध नि ध प, ग प रे ग रे सा

पकड़ : सा रे ग रे, ग प, ध नि ध प, रे ग रे सा

विशेषता : यह कर्नाटक पद्धति का एक राग है। इस राग के आरोह में निषाद दुर्बल है । इस राग के थाट का उल्लेख ‘रागलक्षण’ में है | दक्षिण में इसे ‘षड्विधमार्गिनी’ मेल से जन्य माना है । ‘संगीत पारिजात' ग्रन्थ में इस राग का उल्लेख ‘मेघनाद’ नाम से पाया जाता है।[१००] इसे ‘सालग वराली तोड़ी’ भी कहते हैं । इस राग के पूर्वांग में ‘तोड़ी’ तथा उत्तरांग में ‘अहीर भैरव’ के स्वरों का मेल है।

स्वर विस्तार : सा सारेसासा नि़ ध सा, सारे, रेग, गरे नि़ध़ सा। सारेनि़ध़प़, प़ सा, सारे ग, रेग, पधपग, ग रे, रेग रे सा | सारेगप, ध-प-, पधनि - ध प, ध प रे ग, सारेग प, रे ग रे सा। सारेगगरेसा सारेगप, धनिधप, पध निध सां, सां सांरेंसांसां निध प, पध नि पध निध प, गरेगप, धप, निधप, रे ग प रे ग रे सा। सारेगपधनिध सां, धसां निध सां, रेगपधनिसां, सांरेंगंगंरेंसां, सां, निध पधनिध, पधप, ग, रेगप, प, रे ग रे, सा।[१०१]

राग : सालगवराली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: जावो जावो श्याम सुन्दर, छोड़ो मोरी बैयाँ जाने दे घरवा।
अंतरा: बिनती करत मैं पैंयाँ परत हूँ, श्याम नाही मानत नन्द कुवर।।

स्थायी

ग
जा

प धनि सां नि	सां - नि ध	प - रे ग	रे - सा रे
वो जाऽ ऽ वो	श्या ऽ ऽ ऽ	म ऽ सु ऽ	न्द ऽ र छो
३	×	२	०
नि़ सा - रे	ग - प -	ग प ध ^प-	^गरे रे सा ग
ड़ो मो ऽ री	बै ऽ याँ ऽ	जा ने दे ऽ	घ र वा जा
३	×	२	०

अंतरा

ग
बि

प - ध नि	सां नि सां -	सां रें गं रें	सां नि ध सां
न ऽ ती क	र त मैं ऽ	पैं ऽ याँ प	र त हूँ श्या
३	×	२	०
सां सां नि ध	प नि ध -	रे - रे ग	रे - सा ग[102]
म ना ऽ ही	मा न त ऽ	न ऽ न्द कु	व ऽ र जा

राग : सालगवराली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : भटकत काहे बावरे करम लिखा सोई पाइये ।
अंतरा : जो राँची सो साँची सुमर फिर कहा पछताइए ।।

स्थायी

प रे ग रे	सा - रे सा	नि सारे ग रे	ग - - -
भ ट क त	का ऽ हे ऽ	ऽ बाऽ ऽ व	रे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
ग ग प ध	पध नि ध प	पध निसां निध पध	निध पप रेग रेसा
क र म लि	खाऽ ऽ सो ई	पाऽ ऽऽ इऽ येऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

प - पध निसां	नि सां सांरें गं	रें गं रें सां	, नि ध प
जो ऽ राँऽ ऽऽ	ची ऽ सोऽ ऽ	साँ ऽ ची ऽ	, सु म र
०	३	×	२
प प धप ग	- रे ग प	पध निसां निध पध	निध पप रेग रेसा[१०३]
फि र कऽ हा	ऽ ऽ प छ	ताऽ ऽऽ इऽ एऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

सन्दर्भ - चतुर्थ अध्याय

१. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२१ |

२. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२२ |

३. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक- गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.५४१ |

४. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१११|

५. रातंजनकर, श्री. ना. (१९९४). अभिनवगीतमंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य, एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेसन, दादर बम्बई. पृ.१७५ |

६. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१११|

७. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.११३|

८. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.६३,६४ |

९. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.६४ से ६५ |

१०. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५८ से ५९ |

११. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. २४४ |

१२. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ७५|

१३. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५८ से ५९ |

१४. राग - सरस्वती https://youtu.be/56bY0-WpeN8 गायक : उ. मुबारकअली खान , Live at Al-Hamra Art Centre in Lahor on 25 November 2011 (Lahor Music Forum) You Tube.

१५. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. २१० से २११ |

१६. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. २१२ |

१७. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ६६|

१८. झा, रामाश्रय. (१९९९). अभिनव गीतांजलि. (भाग तीन). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. ४३ से ४४ |

१९. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ६८|

२०. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत – पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक.). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग.

लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३०० |

२१. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक- गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३६ से ३८ |

२२. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ३१ |

२३. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१५ |

२४. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३०८ |

२५. रातंजनकर, श्री. ना. (१९९४). अभिनवगीतमंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य, एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेसन, दादर बम्बई. पृ. ९४ |

२६. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३०९ |

२७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३१२ |

२८. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ.३४ |

२९. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ३६ |

३०. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४९ |

३१. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 113 to 114.

३२. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ५१ |

३३. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६२ |

३४. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक - गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २३३ |

३५. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५१९ से ५२० |

३६. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE No. 2, 3 & 4.

३७. राग - दीपक https://youtu.be/k25zubw8j8E रचनाकार : उ. निसार हुसैन खान (रामपुर सहसवान घराना) |

३८. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ५५ से ५६ |

३९. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २४१ |

४०. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक - गर्ग,

लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३८८ से ३८९ |

४१. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE No.104.

४२. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.५७ |

४३. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.४५ |

४४. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक - गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ ३८५ |

४५. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.४६

४६. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१४८ से १४९ |

४७. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१५१ |

४८. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग,

लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.७७ |

४९. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१५२ से १५३ |

५०. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 212 to 215.

५१. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१५५ |

५२. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १६३ से १६४|

५३. राग - नट सारंग : https://youtu.be/QFphSSd8ScI गायक : पं. विजय बक्शी |

५४. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १०३ से १०४|

५५. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १६७ और ४३२ |

५६. राग - मियांकी सारंग : https://youtu.be/_YsLrD_alFk गायक : पं. शरद साठे |

५७. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ.२१८ |

५८. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि. (भाग तिन). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १९१ |
५९. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ.२१८ |
६०. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ.२२० |
६१. राग - अंबिका सारंग : https://youtu.be/nWqHYvG-R98
६२. शाह, ज. त्रि. (१९९१). मल्हार के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९८ |
६३. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश.पृ. ४४७ |
६४. शाह, ज. त्रि. (१९९१). मल्हार के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९८ |
६५. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २८७ |
६६. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 103.
६७. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक – गर्ग, लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ २९२ से ४५२ |
६८. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.७७ से ७९ |

६९. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ५५ |

७०. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ.८ |

७१. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ५५ |

७२. राग - कौशिकरंजनी : https://youtu.be/i9KHxXGJOt0
रचनाकार : चिदानन्द नगरकर

७३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ९६ |

७४. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७६५ |

७५. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.३६ तथा १३४ |

७६. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE No. 85|

७७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक- गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७६५ से ७६६ |

७८. राग - गोपी बसंत : https://youtu.be/TVpaaXootVc गायक : पं. विश्वनाथ रिंगे |

७९. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ६१ |

८०. कुन्टे, खण्डेराव बलवंतराव. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ६३ |

८१. पंडित, य. स. (१९६२). हिंदुस्थानी ख्याल – गायकी. (भाग पाँचवा). भारतीय संगीत प्रसारक मण्डल, पुणे. पृ.१४१ |
८२. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१११ |
८३. पंडित, य. स. (१९६२). हिंदुस्थानी ख्याल – गायकी. (भाग पाँचवा). भारतीय संगीत प्रसारक मण्डल, पुणे. पृ.१४२ से १४४ |
८४. राग - मालव : https://youtu.be/n81jDQwP8FI
पंडित, य. स. (१९६२). हिंदुस्थानी ख्याल – गायकी. (भाग पाँचवा). भारतीय संगीत प्रसारक मण्डल, पुणे. पृ.१४१ से १४२ |
८५. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ११५ |
८६. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ.१६२ |
८७. रातंजनकर, श्री. ना. (१९९४). अभिनव गीत मंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन, दादर, बम्बई. पृ.११२ |
८८. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. २६|
८९. राग - परमेश्वरी : https://youtu.be/Nin99dMWv_o गायक : पं. प्रभाकर कारेकर |
९०. आठवले, वि. रा. (२००८). नादवैभव. (प्रथम आवृत्ती.). संस्कार प्रकाशन, मुंबई. पृ.९२ |
९१. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ.५७|

९२. राग - मधुकल्याण : www.oceanofragas आठवले, वि. रा. (२००८). नादवैभव. (प्रथम आवृत्ती.). संस्कार प्रकाशन, मुंबई. पृ.९२ |

९३. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे, के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३०३ |

९४. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१२७ |

९५. राग - अहीर ललित : https://youtu.be/ceW9ZUs2jrk गायक : पं. सी.आर. व्यास |

९६. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१२८|

९७. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१३५ से १३६ |

९८. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१३६ से १३७ |

९९. राग - मालती बसन्त : गायक : Ustad Ghulam Taqi khan (Rampur Sahaswan Gharana) https://youtu.be/cNH8clLLOF4

१००. रातंजनकर, श्री. ना. (१९९४). अभिनव गीत मंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन, दादर, बम्बई. पृ.१६५ |

१०१. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. २८|

१०२. राग - सालगवराली : गायक : पं. समेरस चौधरी
https://youtu.be/cxv-wIVCW0Q
१०३. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक – पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.२९ से ३० |